

15 वां अंक | अर्द्ध वार्षिक | जुलाई - दिसंबर 2019

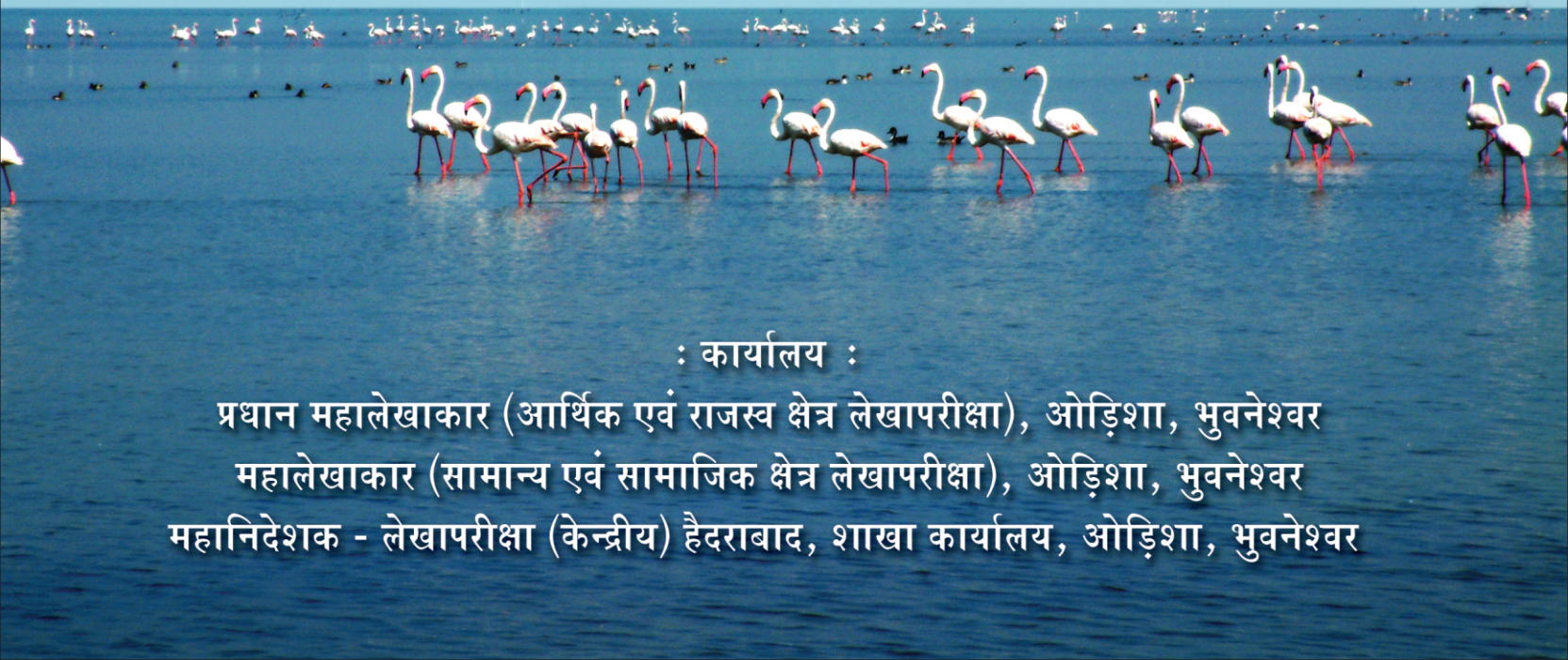


सत्यमेव जयते

सुरभि



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



: कार्यालय :

प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा), ओड़िशा, भुवनेश्वर
महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), ओड़िशा, भुवनेश्वर
महानिदेशक - लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) हैदराबाद, शाखा कार्यालय, ओड़िशा, भुवनेश्वर



सुरभि परिवार

परामर्शदातृ समिति

प्रधान महालेखाकार

(आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा)

महालेखाकार

(सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा)

वरि. उपमहालेखाकार

प्रशासन (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा)

वरि. उपमहालेखाकार

प्रशासन (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा)

उपनिदेशक

(केन्द्रीय राजस्व लेखापरीक्षा)

संपादक मंडल

प्रधान संपादक

श्री दीपक रघु

वरि. उपमहालेखाकार / प्रशासन

सह संपादक

श्री अशोक कुमार पण्डा

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती शुभस्मिता आचार्य

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री कपिलास प्रधान

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री रोहित कावा

सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री गिरराज शरण अग्रवाल

वरि. अनुवादक

श्री शैलेन्द्र कुमार

वरि. अनुवादक

श्री मंजेश परासर

वरि. अनुवादक

श्री लोकेश चंद्र लाल

कनि. हिंदी अनुवादक

श्रीमती मोनिका चौहान

कनि. अनुवादक

सुश्री दीपिका चटर्जी

कनि. अनुवादक

श्री अयस्कांत महांति

डीईओ

श्री जीतेन्द्र कुमार

डीईओ

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार का नाम	पृष्ठ सं.
1.	मानव जन्म का सदुपयोग	श्री जोगानंद महांति	7
2.	उड़ान	श्री राज कुमार	8
3.	किस्मत का खेल	श्रीमती चिन्मयी मिश्र	9
4.	नीला आसमान और स्वच्छ हवा	श्री आशीष रंजन	11
5.	माँ : जननी है तू मेरी मुझसे नाराज मत होना	श्री दिनेश कुमार	13
6.	प्रकोप	श्रीमती चन्दकान्ति शतपथी	13
7.	माँ की सीख	श्रीमती स्नेहा श्रीवास्तव	14
8.	अवसर	श्री लोकेश चंद्र लाल	16
9.	होती बेटियाँ अनमोल रतन	श्री ऋषि कुमार	16
10.	प्रतिज्ञा	श्रीमती कमला नायक	17
11.	ये कैसे हैं हम हिंदुस्तानी	श्री गंगाधर पंडा	20
12.	आधुनिक मनुष्य के लिए विश्राम एवं ध्यान	श्रीमती अंकीता कुमारी अजय	21
13.	सपना	सुश्री मीनू पंवार	22
14.	मैं अपने देश के लिए क्या कर सकता हूँ ?	श्री गिरराज शरण अग्रवाल	23
15.	एक कदम चंदका की ओर	सुश्री तितली पंडा	25
16.	अवर्चित (The Unsung)	श्री शैलेंद्र कुमार	27
17.	बदलते अपने	श्री विनय सिंह	29
18.	स्त्री शिक्षा का महत्व	श्रीमती निभा रंजन	30
19.	आज भी याद है	श्रीमती विनोदिनी महाराणा	31
20.	प्रेरणादायक कहानियाँ	सुश्री स्मृति निवेदिता साहू	32
21.	ऐ बचपन	श्रीमती मोनिका चौहान	33
22.	बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ	श्री संतोष कुमार बेहेरा	34
23.	इस जग में भेजा था तूने	श्री ऋतुध्वज	35
24.	भारत में विविधता में एकता	श्री अजीत कुमार तिवारी	36
25.	महिलाओं के साथ हिंसात्मक व्यवहार	श्री राजेश कुमार झा	37



संदेश



श्रीमती यशोधरा राय चौधुरी

प्रधान महालेखाकार
(आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा)

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सुरभि' के 15 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हिंदी हमारे राष्ट्र की राजभाषा है एवं कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करना हम सभी का संवैधानिक दायित्व है।

इस वर्ष से कार्यालयीन पत्रिका 'सुरभि' का अर्धवार्षिक प्रकाशन किया जाना हमारे हिंदी के प्रति बढ़ती रूचि एवं प्रेम को दर्शाता है।

मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

(यशोधरा राय चौधुरी)

प्रधान महालेखाकार
(आ. एवं रा. क्षेत्र. लेप.)

संदेश



श्री बिभुदत्त बसंतिया

महालेखाकार

(सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा)

यह अत्यन्त ही हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय की अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका 'सुरभि' का पंद्रहवां अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। इसके लिए मैं कार्यालय के संपादक मंडल तथा रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ जिनके अथक प्रयासों से गृह पत्रिका 'सुरभि' वर्ष दर वर्ष उन्नति की ओर अग्रसर है।

यह पत्रिका हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार करने का छोटा सा प्रयास है। हिंदी भाषा भारत का गौरव है। यह अत्यंत ही सरल भाषा है। इसकी खासियत है कि इसे जैसा लिखा जाता है वैसा ही बोला जाता है इसलिए कोई भी इस भाषा को आसानी से सीख सकता है। किसी भी भाषा का महत्व उस भाषा के प्रयोग से ही संभव है और हिंदी के प्रयोग के लिए यह पत्रिका एक मंच प्रदान करती है। पत्रिका 'सुरभि' के माध्यम से कार्यालय में हिंदी के प्रयोग में जो प्रगति हो रही है, वह सराहनीय है।

मैं संपादक मंडल को उनके योगदान हेतु धन्यवाद देता हूँ एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

(बिभुदत्त बसंतिया)

महालेखाकार

(सा. एवं सा. क्षे. लेप.)

संपादकीय...



श्री दीपक रघु

वरि. उपमहालेखाकार/ प्रशासन (सा. एवं सा. क्षे.लेप.)

हिंदी पत्रिका 'सुरभि' का पंद्रहवाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। प्रत्येक अंक की भांति इस अंक में भी रोचक, मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक रचनाओं को समाहित किया गया है, जो आपके समक्ष सस्नेह प्रस्तुत है।

यह पत्रिका कार्यालयीन कार्यों को हिंदी में करने के लिए प्रेरणा व प्रोत्साहन का कार्य करती आ रही है। पत्रिका के प्रकाशन का एक अन्य प्रमुख उद्देश्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति रूचि जागृत करना एवं साहित्य और रचनात्मक प्रतिभा का विकास करना है।

मैं आशा करता हूँ, कि प्रस्तुत अंक राजभाषा के प्रति जागरूकता का वातावरण बनाने में मददगार साबित होगा। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों को बधाई देता हूँ।

पत्रिका 'सुरभि' के निरंतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

दीपक रघु

(दीपक रघु)

वरि. उपमहालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय-महालेखाकार (सा. एवं सा.क्षे.लेप.),
ओड़िशा, भुवनेश्वर

सुरभि



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम 30प्र0, इलाहाबाद
Office of the Accountant General (Accounts & Entitlement)-I, U.P., Allahabad

हिन्दी प्रकोष्ठ (सा.एवं सा.क्ष.ले.प.)
डी.ओ./कैब्रिट/मैल संख्या-622
दिनांक- 4/11/19

प.सं.- हि.अ.पत्रिका/ 70144
दिनांक: 24-10.2019

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी
कार्यालय महालेखाकार (सा.एवं सा.क्ष. ले.प.), ओडिशा
सचिवालय मार्ग,
भुवनेश्वर - 751001

विषय:- हिन्दी पत्रिका "सुरभि-2019" के 14वें अंक की प्राप्ति एवं प्रतिक्रिया ।

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "सुरभि-2019" के 14वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है । संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस, पठनीय एवं संवाहणीय हैं । विशेषकर श्री लोकेश चंद्र लाल (गरीबी), श्रीमती मोनिका चौहान (विदाई), श्रीमती कमला नायक (रोमन्चम), श्रीमती अंकीता कुमारी अजय (नन्हा एहसास), श्री ऋषि कुमार (मौ) एवं श्री ऋतुचंद्र (वर्तमान युवा : दशा और दिशा) की रचनाएँ काफी रोचक एवं उल्लेखनीय हैं ।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मण्डल के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं । पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यह हमारी शुभकामना है ।

भवदीय,

लेखापरीक्षा/हिन्दी

20, शरोजनी नन्दु मार्ग, इलाहाबाद - 211001 दूरभाष : 2622625, 2622626, 2622628, 2623353, 2623354 फैक्स : 2532 - 2424740
20, Sarojini Naidu Marg, Allahabad - 211001 Phone : 2622625, 2622626, 2622628, 2623353, 2623354 Fax : 0532 - 2424740



हिन्दी प्रकोष्ठ (सा.एवं सा.क्ष.ले.प.)
डी.ओ./कैब्रिट/मैल संख्या- 622
दिनांक- 4/11/19

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(आर्थिक एवं क्षेत्र विकास लेखापरीक्षा) पश्चिम बंगाल
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL
(Economic and Revenue Sector Audit)
West Bengal

संख्या :- हिन्दी कक्षा/पत्रिका पावती/ 65

दिनांक:- 31/10/2019

सेवा में,

व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी
कार्यालय महालेखाकार (सा.एवं सा.क्ष.ले.प.) का कार्यालय
सचिवालय मार्ग, भुवनेश्वर - 751 001

विषय: हिंदी पत्रिका "सुरभि-2019" के चौदहवें अंक के प्रेषण के संबंध में।
संदर्भ: हि.प्रको.सुरभि-2019/प्रेषण/2019-20/161 दिनांक: 04.10.2019

महोदय/महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित वार्षिक हिन्दी पत्रिका "सुरभि-2019" के एक से चौदहवें अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ ही पत्रिका की साज-सज्जा भी बहुत सुन्दर है। कविताएँ एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। श्री सतीश कुमार द्वारा लिखित कविता "मैं लड़की हूँ", सुश्री प्रजा निवेदिता साहू द्वारा रचित कविता "बिल्ली घली दिल्ली", श्री भोलानाथ साहू द्वारा लिखित कहानी "मुल्ला का लगान", श्रीमती रंजना श्रीवास्तव द्वारा लिखित कविता "मेरी मौ", श्री विकास कुमार द्वारा रचित कविता "बारिश का मौसम", श्री नवीन चन्द्र चौधरी द्वारा रचित कविता "किताब" एवं श्री अक्षय कुमार मिश्र द्वारा रचित लेख "लालच की कोई सीमा नहीं है" सर्वाधिक रोचक एवं शिक्षाप्रद हैं। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

भवदीय,

व.लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

सी.जी.ओ कॉम्प्लेक्स, डी.एफ ब्लॉक, सॉल्ट लेक, 5 वां तल, कोलकाता - 700064
3rd MSO Building, 5th Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata - 700 064
Phone : (033) 2358-6886/92; FAX : (033) 2337-6966, E-mail: aglaWestbengal@cag.gov.in

हिन्दी प्रकोष्ठ (सा.एवं सा.क्ष.ले.प.)
डी.ओ./कैब्रिट/मैल संख्या- 623
दिनांक- 4/11/19

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ
एलीय तल, आडिट भवन, टी.सी 35-V-1, गोमती नगर, लखनऊ - 226 010

पत्रांक: प्र.नि.ले.प.(के.)/प्रशासन/का.सं-67/1298 दिनांक- 16.10.2019

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी
महालेखाकार (सामाजिक एवं सामान्य क्षेत्र लेखापरीक्षा)
का कार्यालय
ओडिशा
सचिवालय मार्ग
भुवनेश्वर - 751001

विषय: हिन्दी पत्रिका "सुरभि-2019" के चौदहवें अंक के प्रेषण के सम्बन्ध में।

महोदय

हिन्दी पत्रिका 'कावेरी' के 'सुरभि-2019' के चौदहवें अंक की प्राप्ति हुई, धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सामग्री जैसे 'गरीबी', 'रसोई का कचरा: पौधों के लिये वरदान' 'मौ' आदि रचनाएँ उत्तम एवं प्रशंसनीय हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिये आपका प्रयास सराहनीय है। पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना सहित सभी रचनाकारों एवं सम्पादक मंडल को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन



सं. 17(1)/2010-स्था/53/33
केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण
CENTRAL ADMINISTRATIVE TRIBUNAL
कटक न्यायापीठ
CUTTACK BENCH

4थी मंजिल, राजस्व भवन, चान्दिनीचौक, कटक-753002
4th Floor, Rajaswa Bhavan, Chandinichouk, Cuttack-753002
दूरभाष/Tel (+91-671) 2508337/ 2509344 फैक्स/Fax (91-671) 2508200
दिनांक/Dated- 21/10/2019

सेवा में,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी / हिंदी,
महालेखाकार (सा. एवं सा. क्ष. ले.प.) का कार्यालय,
सचिवालय मार्ग, भुवनेश्वर-751 001
ओडिशा

हिन्दी प्रकोष्ठ (सा. एवं सा. क्ष. ले.प.)
सी.ए.जी.ओ. संख्या- 592
दिनांक- 25/10/19

विषय: हिंदी पत्रिका 'सुरभि-2019' के चौदहवें अंक का प्रेषण।

आदरणीय महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सुरभि-2019' के चौदहवें अंक की एक प्रति आपके पत्र सं- हि. प्रको.सुरभि-2019/प्रेषण/2019-20/168 दिनांक- 04.10.2019 के साथ हमारे कार्यालय को दिनांक 14.10.2019 को प्राप्त हुआ।

यह पत्रिका उपर से जितनी आवश्यक दिख रही है, इसमें निहित रचनाएँ उजली टी शेटक, मल्लोरेजक एवं ज्ञानवर्धक भी हैं।

इस पत्रिका को कार्यालय की पुस्तकालय में अभिलेखित कर लिया गया है, जिसका अवलोकन सभी पाठकों को कसबाया जाएगा।

हमारे पूरे कार्यालय की तरफ से सभी रचनाकारों को उनके कृतियों के लिए ढेरों बधाईयाँ तथा इस पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु ढेरों शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

भवदीय,

के. मिहंते
(केदारनाथ ओडरी)
अनुमान अधिकारी (स्था.)

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता । (आचार्य विनोबा भावे)

सुरभि



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा), उत्तराखण्ड
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT),
UTTARAKHAND



पत्रांक: हिन्दी/सामान्य-विविध/25/2018-19/उ-३
दिनांक: 2.3.10.2019

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा)
ओडिशा, भुवनेश्वर - 751001

विषय: हिन्दी पत्रिका "सुरभि" के चौदहवें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित हिन्दी गृह पत्रिका "सुरभि" के चौदहवें अंक की प्रति प्राप्त हुई।
कार्यालय के 'ग' क्षेत्र में होने के बाद भी हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन करना राजकाज में
हिन्दी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने का एक सार्थक प्रयास एवं सराहनीय कदम है। पत्रिका में
समाहित सभी रचनाएं जानवरपक, प्रेरणादायक एवं रोचक हैं। ज्यादातर रचनाओं के माध्यम से
समसामयिक सोच एवं आधुनिक समाज में व्याप्त समस्याओं को उजागर किया गया है।

पत्रिका के कुशल संपादन व सहयोग हेतु सम्पादक मण्डल एवं रचनाकार बधाई के
पात्र हैं। पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

(संजय राजदान)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी

महालेखाकार भवन, कोलागढ़, देहरादून - 248195 *Mahalekhakar Bhawan*, Kaulagarh, Dehradun - 248195
दूरभाष / Phone : 0135 - 2970870 फैक्स / Fax : 0135 - 2970871, ई-मेल / E-mail : agauuttarakhand@cag.gov.in



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT),
UTTARAKHAND



पत्रांक: हिन्दी/सामान्य-विविध/25-2018-2019/49
दिनांक: 03.11.2019

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी प्रकोष्ठ
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखा परीक्षा)
ओडिशा, भुवनेश्वर-751001

विषय: हिन्दी पत्रिका "सुरभि" के 14वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "सुरभि"
के 14वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका में संकलित रचनाएं लेखकों के रचना-संसार के विविध पहलुओं पर प्रकाश
झालने वाली हैं। यह विविधता न केवल विभिन्न कार्यक्रमों के छायाचित्र आकर्षक हैं तथा
पत्रिका में संकलित रचनाओं की सादगी भी प्रशंसनीय है। कार्यालय के प्रायः सभी वर्ग के
कर्मियों ने जिस प्रकार अपनी सृजनशीलता से पत्रिका को सुसज्जित किया है वो अन्य
कार्यालयों के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण है। हम मुक्त कण्ठ से इसकी प्रशंसा करते हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पुनः हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की
उत्तरोत्तर प्रगति के लिए सागर शुभकामनाओं सहित।

भवदीय

(संजय राजदान)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी

महालेखाकार भवन, कोलागढ़, देहरादून - 248195 *Mahalekhakar Bhawan*, Kaulagarh, Dehradun - 248195
दूरभाष / Phone : 0135 - 2970870 फैक्स / Fax : 0135 - 2970871, ई-मेल / E-mail : agauuttarakhand@cag.gov.in



महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - द्वितीय का कार्यालय, मध्यप्रदेश
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E)-II, Madhya Pradesh



क्रमांक: हिन्दी कक्ष-2/अभिमत/234

दिनांक : 06.11.2019

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा)
ओडिशा, भुवनेश्वर-751001

विषय: आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "सुरभि" की पावती एवं अभिमत।

महोदय,

आपके कार्यालय के पत्र सं./हिन्दी कक्ष(आ.एवं रा.क्ष.लेख.)/राजभाषा सुरभि/2019-20/141, दिनांक :
23.10.2019 के साथ संलग्न हिन्दी पत्रिका "सुरभि" के 14वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ
धन्यवाद।

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएं न केवल उपयुक्त हैं अपितु अत्यंत ही सराहनीय हैं,
विशेषतया श्रीमती मोनिका चौहान की कहानी " शिखर ", श्री लोकेश शंकर साहू की कहानी " गरीबी ", एवं
श्रीमती सुनंदा पाटी की कविता " वन है सच "।

पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक प्रशंसा है।

भवदीय,

(संजय राजदान)
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिन्दी)

हिन्दी केवल भाषा नहीं है, यह भाषा की अभिव्यक्ति भी है।

Address : Lekha Bhawan, Jhansi Road, Gwalior-474002
Phone : 0751-2323968
Fax : 0751-2432194

पता : लेखा भवन, जयंती रोड, ग्वालियर - 474002
दूरभाष : 0751-2323968
फैक्स : 0751-2432194

कार्यालय महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल-462011

क्रमांक हिन्दी कक्ष/फा-07/विविध/जावक-39

दिनांक : 15/11/2019

प्रति,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ हिन्दी प्रकोष्ठ
प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) कार्यालय,
ओडिशा, भुवनेश्वर- 751001

विषय: हिन्दी पत्रिका 'सुरभि' के 14वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

संदर्भ: आपका पत्र सं. - हिन्दी कक्ष(आ एवं रा क्ष ले प)राजभाषा सुरभि/2019-20/122,

दिनांक 23/10/2019।

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका 'सुरभि' के 14वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद, पत्रिका का सम्पादन
सराहनीय है। पत्रिका में सभी लेख एवं रचनाएं प्रशंसनीय हैं। विशेष तौर पर बुद्ध और बोधिधर्म, गरीबी, विदाई, माँ
और बचपन, रोमन्थन आदि रचनाएँ प्रेरणादायक और सराहनीय हैं।

पत्रिका का प्रवाह इसी प्रकार निरंतर चलता रहे, ऐसी कामना है।

(संजय राजदान)
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी/ हिन्दी कक्ष

मानव जन्म का सदुपयोग

श्री जोगानंद महान्ति

वरिष्ठ लेखापरीक्षक / संपदा



भगवान की अपार कृपा से हमें “ मनुष्य योनि ” का यह सुंदर उपहार मिला है । इस ब्रह्मांड में लगभग 84 लाख जीव योनि में भ्रमण करने के बाद मनुष्य जन्म लेता है । इस शरीर को सुसज्जित करने में भी भगवान ने कोई त्रुटि नहीं छोड़ी । इस शरीर की पाँच ज्ञानेंद्रियों (आँख, नाक, कान, जीभ और त्वचा) एवं पाँच कर्मेन्द्रियों (हस्त, पद, आयु, वाक्, उपस्थ) से युक्त बनाया । ज्ञानेंद्रियों द्वारा मनुष्य भौतिक जगत के विषय ग्रहण कर जीवनी शक्ति को बढ़ाकर तन-मन से स्वस्थ रहता है । जीवन का विकास करने के लिए कर्मेन्द्रियों का आश्रय लेता है । सभी इंद्रियाँ अपना निर्धारित कर्म करती हैं । इसके अतिरिक्त, एक और इंद्रिय मन है जिसको इंद्रियों का राजा कहा जाता है ।

इस शरीर को परमात्मा ने अपने चेतन द्वारा प्रकाशित किया । उसका प्रकाश अर्थात् चेतन सत्ता यदि शरीर में नहीं होती तो मनुष्य मृत- तुल्य है । मनुष्य को स्वयं ही सोचना है कि इस दिव्य जीवन को पाकर हमें उस दाता का धन्यवाद कैसे करना है ? किस प्रकार उसकी सेवा करके ऋण मुक्त होना है ? मानव-जीवन में पाँच ऋण शामिल है । ऋण का मतलब मानव के पारस्परिक सहयोग बिना संसार में कार्य नहीं हो पाएगा । माता-पिता से संतान की उत्पत्ति होती है । माता शेष कष्ट स्वीकार सहकर अपने संतान का लालन-पालन करती है और पिता उसका भरण-पोषण करते हैं । अतः सभी लोग अपने माता-पिता के ऋणी हैं । (मातृ-पितृ ऋणी)

मानव सामाजिक प्राणी है । आपदा-विपदा के समय हम पड़ोसियों से सहायता लेते हैं । इसलिए हम अन्य व्यक्तियों के ऋणी हैं । (नर ऋणी)

हमारे दैनिक जीवन में अनेक पशु-पक्षी और वृक्ष से हमें उपकार मिलता है । गाय से दूध मिलता है । बैल कृषि कार्य में सहायता करता है । वृक्ष हमें फल, फूल शव आदि देता है । इसे भूतऋण कहते हैं ।

यह संसार 33 कोटि देवताओं से परिचालित होता है । अतः हम सूर्य, जल, अग्नि, वायु आदि के ऋणी हैं ।

जन्म से मानव पिता-माता, ज्येष्ठ, अभिभावक, शिक्षक से ज्ञान प्राप्त कर अपना जीवन समृद्ध होता है जिसे ऋषि ऋण कहते हैं । अतः जबतक ऋण है तबतक आत्मविकास और ज्ञानप्रकाश नहीं होता ।

ऋण से मुक्त होने के कई मार्ग हैं । ऋषियों ने ऋण से मुक्ति के लिए पंच-यज्ञ का अनुपालन करने के लिए उपदेश दिया है । रोज देवयज्ञ, ऋषियज्ञ, पितृयज्ञ, नृत्यज्ञ, भूत यज्ञ करना चाहिए ।

देवयज्ञ- देवऋण से मुक्त होने के लिए मनुष्य को जप, ध्यान, व्रत, पवास, तीर्थ-भ्रमण आदि करना चाहिए ।

ऋषियज्ञ- इस ऋण से मुक्ति हेतु स्वाध्याय, शास्त्रपाठ के माध्यम से ज्ञान लाभ करने के बाद दूसरे लोगों के साथ सांझा करना चाहिए । प्रवचन, धर्मगाथा, शास्त्र आदि आयोजन करना चाहिए ।

पितृयज्ञ- इस ऋण से मुक्ति हेतु पिता, माता की सेवा करना, संसार धर्म पालन करते हुए संतान पालन करना एवं श्राद्ध और तर्पण आदि करना पितृयज्ञ के अन्तर्गत है ।

नृत्यज्ञ- समाज में समस्त लोग के साध्य अनुसार सहायता प्रदान करना नृत्यज्ञ कहलाते हैं । अतिथि सेवा, दरिद्रनारायण सेवा, अन्नदान सेवा करना, विपन्न को सहायता देना, रोगी लोगों की सेवा करना आदि नृत्यज्ञ है ।

भूतयज्ञ- गोसेवा, गृहपालित पशु का प्रतिपालन, वृक्षादि रोपण और पेड़ों को जल देना आदि कार्य भूतयज्ञ के अंतर्गत है । ये कार्य करने से कभी खाने की कमी नहीं होती है ।

कर्मेन्द्रियों तथा ज्ञानेन्द्रियों को विषय भोगों से हटाकर राष्ट्र सेवा की ओर मोड़ने से प्रत्येक नागरिक का संसार भी सध जाएगा और राष्ट्र धर्म का पालन करता हुआ भगवान का दिव्य चेतना भी प्राप्त होगा । आज का मनुष्य

धर्म तथा अधर्म में अंतर नहीं समझ पा रहा है । मात्र परिवार के लिए उपार्जन करना धर्म नहीं है । अपने परिवार के लिए तो पशु-पक्षी भी सेवा करते हैं । यदि जीवन, व्यक्तिगत परिवार के लिए ही सीमित होकर रह गया तब तो मनुष्य पशु-पक्षी के स्तर से ऊपर ही नहीं उठ सकता । इस स्तर पर जीवनभर बैठे रहना भगवान के द्वारा दिए गए सुंदर उपहार का तिरस्कार करना है ।

व्यक्तिगत लाभ के लिए मनुष्य राष्ट्रहित की सोच ही नहीं पा रहा है । पद-प्रतिष्ठा, धन का लोभ त्यागकर भगवान के द्वारा दी गई बुद्धि में प्रगति कर जीवन में आगे बढ़े, अपनी सोच को सकारात्मक बनाकर निर्माण की दिशा में आगे बढ़े । आज राष्ट्र को तन-मन-धन से सेवा करने का सुअवसर उपलब्ध है ।

ॐ

उड़ान

श्री राज कुमार

डी. ई. ओ. / संपदा कक्ष



मन के तत्वों को पंख लगा
शुरु कर एक नई उड़ान
मंजिल को पाने से न कतरा
भूलकर अपनी सारी थकान
निःसंदेह राहे आसान नहीं
किंतु पंखों की नहीं मन की है उड़ान
बादल भी कहें कर ले आराम
इन पवन के ठंडे झोंकों में
पर मन को यह कहाँ भायें
हुंकार भरा चला फतेह करने अपने मकाम
मन के तत्वों को पंख लगा

शुरु कर एक नई उड़ान
संकल्प साजे उठ खड़े हो
अब न डर तू मझधारों से
पग-पग मिलेगी बाधा
अब न कतरा तू चलने से
वो दिन आयेंगे जब लहू होंगे पैरों में
पतवार थाम उठ खड़े हो तुम
अभी साहस परचम दिखलाना बाकी है ।
मन के तत्वों को पंख लगा
शुरु कर एक नई उड़ान ॥

ॐ

किस्मत का खेल

श्रीमती चिन्मयी मिश्र

पत्नी - श्री विक्रम केशरी मिश्र

वरिष्ठ लेखापरीक्षक / संपदा



जिंदगी के हर सफर में हम दो रास्ते पाते हैं। एक हमें वास्तविकता की उस कठोर राह पर ले जाती है जहां हम दर्द और मुश्किलों का सामना कर मंज़िल पाते हैं लेकिन दूसरा रास्ता सपनों की दुनिया है जो थोड़े वक्त के लिए ही सही पर हमें ढेर सारी खुशियाँ दे जाती है।

सपनों की दुनिया में उलझकर हम असल जिंदगी के सच से बेखबर हो जाते हैं। होता वही है जो ईश्वर को मंजूर होता है और हमारे तकदीर में गढ़ा होता है। एक ऐसी ही कहानी है जो सपनों से छूटकर हकीकत की दर्द भरी दुनिया की ओर जाती है।

हर लड़की का एक ख्वाब होता है। शादी के बाद उसे प्रेम करने वाला पति मिले और एक खुशहाल प्यारा-सा संसार मिले। ऐसा ही एक सपना लेकर निर्मला ने शंकर के साथ शादी किया था। वह बहुत अच्छा था। निर्मला के पिता नहीं थे सिर्फ माँ थी। पहली बार में ही निर्मला को देखकर अनाथ शंकर ने शादी के लिए हामी भर दी थी। शादी अच्छे से हो गई। शंकर का एक खुद का छोटा-सा होटल था। दोनों इसकी कमाई से अच्छे से रहने लगे पर निर्मला के तकदीर को यह खुशी ज्यादा दिन तक मंजूर नहीं थी। वो रात थी 1999 अक्टूबर 28 की। रेडियो में संवाद आया था कि एक बड़ा सा तूफान आने वाला है। निर्मला ने शंकर को दुकान जाने से मना

किया लेकिन शंकर उसे समझा - बुझाकर होटल चला गया। वह समझ रहा था कि आज बहुत व्यापार होने वाला है और सच में उस दिन बहुत ही अच्छा व्यापार हुआ। तूफान के डर से लोग होटल में ही खा रहे थे और घर के लिए भी भोजन ले जा रहे थे। देर रात तक होटल चला। शंकर रात में घर पहुंचा। निर्मला के हाथ में राशन, सब्जी और पैसा देकर, खा-पीकर सो गया। बारिश, तेज हवा की आवाज से शंकर की नींद टूट गई। वह देखा तूफान शुरू हो गया था। उसने सोचा पानी पीकर सो जाया जाए और सुबह क्या होगा देखा जाएगा। यह सोचकर वह रसोईघर पानी पीने गया। वह पानी शायद उसके लिए आखिरी पानी था। रसोईघर के कुछ दूर एक बड़ा-सा पेड़ था। वह तूफान के कारण रसोईघर के ऊपर आ गिरा। आवाज सुनकर निर्मला रसोईघर के तरफ दौड़कर पहुंची तो देखी कि उसका पति पेड़ और टूटी दीवार के बीच में अपनी आखिरी सांस ले रहा था। निर्मला ने बहुत कोशिश की उसे बचाने के लिए पर शायद वह रब को मंजूर नहीं था। निर्मला की आँखों के सामने सब कुछ खत्म हो गया। निर्मला के पास कोई नहीं था उसके आँसू पोछने के लिए, एक बच्चा भी नहीं था उसको जिसे देखकर दुख भुला सके। वह रातभर रोई। सुबह हुआ पर तूफान के वजह से 2 दिनों तक उसकी मदद के लिए कोई नहीं आ पाया। तीसरा दिन

लोगों के मदद से पति की अंतिम संस्कार की। एक तरह से पागल हो गई थी वह। अचानक उस बदनसीब को रोता हुआ एक अनाथ बच्चा मिला। उस पगली ने उस बच्चे को उठा लिया। निर्मला ने सबके सामने उसे अपना बेटा मान लिया। उसे जीवन जीने की एक दिशा मिल गई। उसने प्यार से उसका नाम शुभ रखा। पति के मरने के बाद होटल की ऋणदाताओं ने उस पर कब्जा कर लिया। निर्मला ने उस बच्चे के लिए अपनी माँ की दी हुई गहने बेचकर एक दुकान खोली और उसे चलाकर अपने धर्मपुत्र का लालन-पालन करने लगी। दिन पर दिन बीतता रहा और उसका बेटा 20 साल का हो गया। देखने वाले सोच भी नहीं सकते थे कि शुभ निर्मला का सगा बेटा नहीं था पर कहते हैं हर खुशी के बाद दुख आता है और काला साया छा जाता है। निर्मला की नजर में शुभ उस दुकान को चला रहा था। दोनों के जीवन में खुशियाँ लौट आई थी। लेकिन 20 साल बाद आया फिर से वही दर्दनाक, भयानक तूफान निर्मला के जीवन में आया जिसे वह भूल गई थी। 2019 में 'फनी' नामक तूफान की काली रात फिर सामने आ गई। तूफान वाली उस रात की वह दर्द भरी कहानी फिर से ताजी हो गई।

शुभ ने इस समाचार से माँ को बेखबर रखने के लिए उसे काम में उलझाकर रखा और चल दिया दुकान को अच्छे से बंद करके आने के लिए। पर वह नहीं आ पाया लौटकर माँ के पास। दुकान बंद करते वक्त एक बड़ा-सा टावर जो उस दुकान के पास था, आकर दुकान के ऊपर गिरा और उसमें शुभ दब गया। अगले दिन, दिनभर निर्मला ने अपने बेटे को ढूँढा पर वह नहीं मिला।

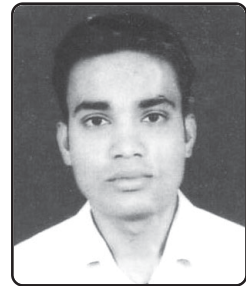
पागल की तरह लोगों से पूछ रही थी- कोई बता दो मेरे बेटे को देखा है क्या? दुकान की तरफ गया था वो। वह थक-हारकर एक जगह बैठ गई। उसने सोचा कहीं तूफान की वजह से दुकान में रह गया होगा पर वहाँ जाकर देखी तो दुकान मिट्टी में मिल चुकी थी। निर्मला के पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई। उसे हर तरफ अंधेरा दिखाई दे रहा था। पास में बीएमसी वाले काम कर रहे थे। निर्मला ने उन लोगों से उस टावर को उठाने और उसके बेटे को बचाने के लिए रो-रो कर मदद मांगी। बीएमसी वालों के मदद से वह टावर उठाया गया तो दुकान की दीवार के नीचे दबा उसका बेटा मिला। जीने की उम्मीद बहुत कम थी। पर कहते हैं जिसकी जीने की घड़ी पूरी नहीं हुई हो तो उसे मौत छू भी नहीं सकती। स्पेशल टीम ने चेकअप करके देखा कि उसके बेटे की धीमी-धीमी सांस चल रही थी। तुरंत इलाज शुरू हुआ और उसने आँखें खोली। आँखें खोलने के बाद वह बताया कि टावर गिरने से पहले दुकान का साइनबोर्ड उसके ऊपर छत की तरह बीच में अटक गया था और टावर उसके ऊपर पूरी तरह से नहीं गिरा। थोड़ी-बहुत चोट लगी पर उसकी जिंदगी बच गई। कहते हैं ना, ईमानदारी का पैसा जिसमें लगता है वह उसका रंग दिखाता है। दुकान जाते-जाते शुभ को नया जीवन दे गया और माँ-बेटे को जीने के लिए दूसरा मौका दे गया। 'फनी' के तांडव से परेशान होकर भी निर्मला की ऐसी बात सुनकर बहुत खुशी मिली। वह काला बादल आया तो था निर्मला से सब कुछ लूटने के लिए पर एक माँ की ममता के आगे हारकर चला गया। भले ही एक पत्नी हार गई थी पर एक माँ की जीत हुई।



नीला आसमान और स्वच्छ हवा

श्री आशीष रंजन

आशुलिपिक / सा. क्षे. - II



राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी इन दिनों प्रदूषण इतनी ज्यादा हो गई है कि सुप्रीम कोर्ट ने इसके लिए सख्त निर्देश जारी किए हैं। कई इलाकों में तो सांस लेते ही ठंडी हवा और भारी मिलती है। वायु प्रदूषण से हम घुटने लगते हैं। पर्यावरण की अवहेलना हो रही है और साथ ही सुधार की कोशिशें भी चल रही हैं। कुछ प्रमाण है कि हमने प्रदूषण के ग्राफ को थोड़ा झुकाया है लेकिन इतना पर्याप्त नहीं है। हम अपने सामूहिक रोष के बावजूद भूल जाते हैं कि हमें सुधार की जरूरत पर केंद्रित रहना चाहिए। यह एक ऐसा मोर्चा है जहाँ हम अंतर साफ देख सकते हैं और सहज ही यह भी जान सकते हैं कि हम और भी बहुत कुछ कर सकते हैं। स्थिति गंभीर है। हमें इस बात पर अब दृढ़ता के साथ ध्यान केंद्रित करना चाहिए कि हम सांस लेने के अधिकार से किसी प्रकार का समझौता नहीं कर सकते।

आखिर हुआ क्या है ? सबसे पहले तो वायु-गुणवत्ता की स्थिति और उसका हमारे स्वास्थ्य के बारे में सार्वजनिक सूचना का सवाल है। कुछ साल पहले सरकार ने वायु गुणवत्ता सूचकांक की शुरुआत की थी जिसमें हमें बताया गया था कि प्रदूषण के प्रत्येक स्तर का हमारे स्वास्थ्य पर क्या असर पड़ता है। हमारे

देश में बड़ी जनसंख्या में वायु गुणवत्ता जाँचते रहने के लिए वायु गुणवत्ता निगरानी स्टेशन स्थापित है। यह सूचना सांस दर सांस उपलब्ध है, हमारे फोन पर हमारे सामने। हम जानते हैं कि सांस लेना कब विषाक्त होता है ? आज हम प्रदूषण के बारे में जानते हैं और रोष में हैं। पर यह भी स्पष्ट हो जाना चाहिए स्टेशनों का यह नेटवर्क देश के अनेक हिस्सों में मौजूद नहीं है। अधिकांश शहरों में एक या दो निगरानी केंद्र ही हैं। इसलिए ज्यादातर लोग इस बारे में नहीं जानते हैं।

दूसरी बात, पिछले कुछ वर्षों में यकीनन बहुत कुछ किया गया है। समय से पहले वायु-गुणवत्ता की व्यवस्था की शुरुआत करने से लेकर कोयला आधारित ताप विद्युत घरों को बंद करने तक। आज देश के अधिकांश हिस्सों में पेट्रोलियम कोक, कोयले के किसी प्रकार के औद्योगिक उपयोग पर पूर्ण प्रतिबंध है। यह अच्छी बात है लेकिन पर्याप्त नहीं है। देश के अधिकांश भागों में स्वच्छ गैस या विद्युत ऊर्जा की ओर लाने की जरूरत है। आंशिक रूप से डीजल कारों की बिक्री घटी है क्योंकि डीजल और पेट्रोल वाहनों के बीच कीमतों में अंतर को घटाने की सरकारी नीति है। डीजल कारों की बिक्री इसलिए भी घटी है क्योंकि ऐसे वाहनों की अधिकतम सीमा 15 वर्ष से

ज्यादा होने पर सड़क पर चलने में मनाही है । लोगों को जहरीले डीजल के बारे में जागरूक करने के लिए भी कहा गया था ।

कई दशकों से वायु गुणवत्ता का आंकड़ा जुटाया गया है । उनसे जो परिणाम मिले हैं, वे इस प्रकार हैं- पहला, इस माँग का सालाना समय घट रहा है । दूसरा, वायु गुणवत्ता निगरानी केंद्र कई वर्षों से सक्रिय है और उन आंकड़ों के अनुसार यदि तुलना करें तो प्रदूषण में गिरावट का रुख दिखता है । पहले के वर्षों से तुलना करें तो 3 वर्षों में करीब 25% की कमी आई है जो एक अच्छी खबर है । अब बुरी खबर कि प्रदूषण में कमी हुई है लेकिन स्थिति फिर भी ठीक नहीं है । हमें प्रदूषण को और 65% कम करना होगा ताकि हमें जैसी वायु चाहिए वैसी मिल सके । हम छोटे उपाय कर चुके हैं । पहली और दूसरी पीढ़ी के सुधार हो चुके हैं । लेकिन हमें सुधार की दिशा में एक लंबा रास्ता तय करना है । स्वच्छ वायु पाने के लिए हमें इंधन के खपत के तरीकों में व्यापक बदलाव लाने होंगे, कोयले के इस्तेमाल को पूरी तरह से बंद करने होंगे, हमें बस,

मेट्रो, साइकिल ट्रैक और पैदल पथ में निवेश करके सड़कों पर निजी वाहनों की संख्या में कमी लानी होगी, साथ ही साथ नियत स्थान और नियत समय पर जाने वाले लोगों को मोटरबाइक या निजी वाहनों की शेरिंग की आदत अपनानी होगी । प्रदूषण फैलाने वाले पुराने वाहनों को उपयोग से हटाना होगा । लेकिन इन उपायों का तब तक ज्यादा लाभ नहीं होगा जब तक कि हम प्रदूषण के स्थानीय स्रोतों पर लगाम नहीं लगाते । हमें कूड़ा-कचरा जलाने, धूल फैलाने और खाना बनाते समय अनावश्यक धुआं पैदा करने की आदत छोड़नी होगी । इन प्रदूषण को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करना तब तक मुश्किल है जब तक कि जमीनी स्तर पर प्रयास नहीं किए जाते, जब तक हम इसका विकल्प नहीं खोज लेते ।

प्लास्टिक और अन्य औद्योगिक घरेलू कचरे को अलग करना होगा, एकत्र करना होगा और शोधित करना होगा । कचरा कहीं भी फेंक देना या जला देना समाधान नहीं है । स्थानीय प्रदूषण पर गौर करना होगा ताकि हम उन से उभर सके । यकीनन हम नीले आसमान और स्वच्छ फेफड़े के लिए जंग जीतेंगे ।

४४४४





माँ : जननी है तू मेरी मुझसे नाराज मत होना

श्री दिनेश कुमार

लेखापरीक्षक / प्रशासन

तू मेरा मंदिर है मेरा भगवान है,
तू ही तो मेरा जहान है ।
तेरे चरणों में सिर रखकर चाहता हूँ अपने पाप धोना
जननी है तू मेरी, मुझसे नाराज मत होना । (i)

कुछ मजबूरियाँ हैं जो तुझसे दूर चला आया हूँ
तेरी एक तस्वीर अपने दिल में संजो लाया हूँ ।
फिर भी तेरी याद दिलाता, घर का हर एक कोना
जननी है तू मेरी, मुझसे नाराज मत होना । (ii)

अब आँखों में वो नींद नहीं आती है
तेरी हाथों की थपकी बहुत सताती है ।
अब याद आता है तेरी गोद में वो सिर रख कर सोना
जननी है तू मेरी, मुझसे नाराज मत होना । (iii)

तुझसे दूर रह कर थक चुका हूँ, थोड़ा सुकून चाहता हूँ
तेरी आंचल की छाँव में कुछ पल सोना चाहता हूँ ।
वो मुझे सूखे में सुला तेरा गीले में सोना
जननी है तू मेरी, मुझसे नाराज मत होना । (iv)

दिल दुखाया तेरा फिर भी तूने प्यार-दुलार दिया
माफ करना माँ, जो मैंने ऐसा पाप किया ।
तुझे कभी भी नहीं चाहता हूँ माँ खोना
जननी है तू मेरी, मुझसे नाराज मत होना । (v)

ॐॐॐॐ

प्रकोप

श्रीमती चन्दकान्ति शतपथी

एम.टी.एस, ई. एस - I, पु-11



हाल ही में हमारे ओड़िशा में आया हुआ था ।
प्रकृति का ऐसा प्रकोप नाम था जिसका 'फनी'
प्रकृति के प्रकोप का एक झलक दिखला गया फनी
इसके कारण हुई जो स्थिति
दुनिया भर में चर्चा उसकी
उखड़ गये कितने पेड़ और बिजली के खंभे
ना रहा गरीब के सिर पर छत
ना रहा पानी, ना रही बिजली
ना रहा संचार का कोई भी माध्यम
पानी और बिजली के बिना कैसे कटी जिंदगी
सोच करके आँखों में आ गया पानी
जो कभी किताबों में पढ़ा था जल ही जीवन
आज वो महसूस भी कर लिया
जो लोग भूल गये थे अपने गाँव का रास्ता
गांव ही बना सहारा उनका
अपने बच्चों को पाकर पास
बूढ़े माँ-बाप की आँखों में आ गये खुशी के आँसू
ना रहे व्हाट्सप और फेसबुक के दोस्त
अब पड़ोसी ही बने सच्चे दोस्त
इस दुःख की घड़ी में
बहुत कुछ सिखला गया फनी
प्रकृति के प्रकोप से ना कोई बच सका दोस्तों
अभी भी वक्त है संभल जाओ दोस्तों ।

ॐॐॐॐ



माँ की सीख

श्रीमती स्नेहा श्रीवास्तव

पत्नी- श्री लोकेश चंद्र लाल
कनि. हिंदी अनुवादक / हिंदी प्रकोष्ठ

बचपन जीवन का सबसे खूबसूरत समय होता है इस खूबसूरत समय से गुज़रने वाला हर व्यक्ति खूबसूरत होता है। उसके भोले-भाले स्वभाव से निश्चलता छलकती है। जो व्यक्ति इस समय से गुज़र जाता है, वह पुनः लौटकर इसी वक्त में जीना चाहता है। बचपन की ज़िंदगी बेरोक-टोक की ज़िंदगी होती है, बाकी ज़िंदगी तो ज़िम्मेदारियों का बोझ उठाते-उठाते गुज़र जाती है।

यह दौर सुहाना होने के साथ-साथ बड़ा नाजुक भी होता है। एक बार अगर किसी घटना की छाप मन में बैठ गई तो वह व्यक्ति के मस्तिष्क पर अमिट छाप-सी बन जाती है।

12 वर्षीय रिमझिम बहुत ही चुलबुल बालिका थी। सामान्य से कद-काठी की थी। छोटी-छोटी किंतु आत्मविश्वास से भरी आँखें, चमकता हुआ गेहुँआ रंग, स्फूर्ति से भरा शरीर और कभी न खत्म होने वाली उसकी बातें। कुल मिलाकर वह एक आकर्षक बालिका थी जो पल-भर भी एक जगह नहीं टिकती थी। घर के अनुशासन को तोड़ती रिमझिम बड़ी हो रही थी। पिताजी रिमझिम पर हमेशा ही नाराज़ रहते थे क्योंकि हर वो बात जो उनको नापसंद थी, वो एक-एक कार्य करना रिमझिम का धर्म था। उसकी बदमाशियाँ, उसकी चंचलता, उसकी इच्छा इन सब को समझने वाली, उसे व्यवहारिकता का

पाठ पढ़ाने वाली एकमात्र उसकी सहचरी थी उसकी माँ। माँ ही थी जो रिमझिम को समझ और समझा सकती थी। यूँ तो 12 वर्ष में हम बचपना ही जी रहे होते हैं। रिमझिम को भी उचित-अनुचित का ज्ञान ना के बराबर था। बस उसे इतनी समझ थी कि जिस बात को माँ मना करें वह अनुचित और जिस बात को करने के लिए कहे या मना न करें वह उचित। सही गलत का आभास होने के नाजुक उम्र से रिमझिम गुज़र रही थी।

यूँ तो रिमझिम को पढ़ाई-लिखाई में ज्यादा रुचि नहीं थी। पढ़ती सिर्फ इसलिए थी क्योंकि पापा को पढ़ने वाले बच्चे बहुत पसंद थे। गणित की जटिलता को रिमझिम का सरल मन सुलझा न पाता था। पिताजी द्वारा दिए गए गणित को न सुलझा पाने के कारण रिमझिम का मन बोझिल-सा हो रहा था। बोझिल मन में अचानक एक स्फूर्ति पैदा हुई और रिमझिम ने पास पड़ी माचिस की डिबिया उठा ली। बार-बार तिनके को जलाना और एक पूंक् में बुझा देने की प्रक्रिया उसे बहुत भा रही थी। अचानक माचिस के तिनके से एक चिंगारी निकली और बिस्तर पर बिछे नए चादर पर गिर गई और वहाँ एक सुराख हो गया। रिमझिम को ऐसा लगा कि जैसे पापा ने जोरदार एक तमाचा मारा हो। गाल और आँखें दोनों ही डर से लाल हो गए। अभी 1 घंटे पहले ही न पढ़ने की

वजह से पापा ने बहुत जोर की डांट लगाई थी और यह भी कहा कि आगे अगर फिर ऐसा हुआ तो स्कूल जाना बंद करवा देंगे । रिमझिम का डर से गला सूख गया । वह सोच रही थी कि अगर पापा को पता चला तो पापा कहीं अबकी बार घर से बाहर निकलना ही बंद न करवा दें । पापा को अगर गुस्सा आता है तो शायद भगवान जी भी डर जाते हैं क्योंकि तब कोई भी मुझे बचाने नहीं आता है ।

आज के बाद मैं कभी भी माचिस को हाथ नहीं लगाऊँगी और मन लगाकर पढ़ूँगी भी । पापा का सब कहना मानूँगी पर भगवान जी प्लीज इस बार बचा लीजिए । प्लीज़, प्लीज़, प्लीज़ न जाने इस एक पल में रिमझिम ने कितने सारे भगवान को याद कर लिया । अपने-आप को संभालते हुए रिमझिम ने आँखें बंद की । आँखें बंद करते ही उसे एक चेहरा नज़र आया और वह चेहरा उसकी माँ का था । चादर लेकर रिमझिम डबडबाई आँखों से माँ

के पास गई और कहा- “माँ यह चादर मुझसे गलती से जल गया” और इतना कहते ही डबडबाई आँखों से जलधारा निकलने लगी । माँ ने उसे गले से लगाकर कहा- “तूने सच कहा और अपनी गलती स्वीकारी है, यह बड़ी बात है । आइंदा कोई भी कार्य सतर्कता से करना और हमेशा सच बोलना । सच के रास्ते पर चलने वाले व्यक्ति कभी भी गलत रास्ते पर नहीं जाते हैं आज तुझे ज़िंदगी के सबसे बड़ी सीख मिली है ।”

इस घटना को आज लगभग 20 वर्ष हो गए । विद्यार्थियों को सच का पाठ पढ़ाते हुए आज रिमझिम गर्व से कह रही है कि उस घटना के बाद रिमझिम ने कभी झूठ नहीं बोला । जब कभी भी संकट की घड़ी आई रिमझिम ने सदा सच का साथ दिया । माँ की उस एक सीख ने रिमझिम के जीवन की दशा और दिशा ही बदल डाली ।





अवसर

श्री लोकेश चंद्र लाल

कनि. हिंदी अनुवादक / हिंदी प्रकोष्ठ

अवसरवाद, अवसरवादी और अवसर
देखने को मिलता है अकसर
समाज में, परिवार में और अपने आप में
सामान्य में, विशेष में और संताप में ।
नारी, वायु के थपेड़ों से बचाती
वो दिए को आँचल से छिपाती
कर दिए की रक्षा, काज वो सँवारती
आँचल के झरोखे से, फिर दीप को बुझाती ।
एक बुलाए, सैकड़ों आए
जीने की होड़ में, मचे हाय-हाय
नौकरी हेतु, चढ़ गए शूल
मिली नौकरी, सब गए भूल ।
दफ्तर में देखें रंग अनेक
मेज पर चश्मा, फाइल आध-एक
बाबू लापता, कर लो चेक
सरकारी तवे पर, रोटी सेक ।
है दुनिया यही, एकनिष्ठता नहीं
कहीं आडम्बर, बहुरूपता कहीं
रक्षक वही, भक्षक वही
निरीह पुकारे त्राही – त्राही ।



ॐॐॐॐ

होती बेटियाँ अनमोल रतन

श्री ऋषि कुमार

लेखापरीक्षक, ई.सी.पी.ए.



होती बेटियाँ अनमोल रतन
जिन्हें मिली सौभाग्य वो जन
पिता, पति हो या हो पुत्र
सबके लिए करती घोर जतन
होती बेटियाँ अनमोल रतन ।

स्नेह भरा इनके कण कण
माँ, पत्नी हो या हो ये बहन
बैर ना करती किसी से भी
पवित्र होता इनका मन
होती बेटियाँ अनमोल रतन ।

हर क्षेत्र में होती नंबर वन
चाहे हो सीमित मौके और संसाधन
होता इनका कुशल प्रबंधन
होती बेटियाँ अनमोल रतन ।

बोझ है बेटियाँ बदलो ये मन
संवरती ये सबका जीवन
हो ना कभी पक्षपात इनसे
लेना होगा सभी को प्रण
होती बेटियाँ अनमोल रतन ।

ॐॐॐॐ

प्रतिज्ञा

श्रीमती कमला नायक

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)



“जवान शहीद हो गया”, आजकल सब अखबारों में यही सुर्खी है । यह समाचार बहुत दुःखद है । एक जवान परिवार, समाज और देश का रखवाला है । आज की दुनिया में निरंतर युद्ध, आतंकवाद के घातक हमले, साम्प्रदायिक दंगे हो रहे हैं पर आम जनता फिर भी शांति से सो सकती है । यह सिर्फ उन जवानों के कारण है, जो अपने प्राण और परिवार को संकट में डालकर देश को सुरक्षा दे रहे हैं । इस बलिदान के कारण ही देश उनका सम्मान करता है और किसी जवान के शहीद होने पर उनको श्रद्धांजलि देता है ।

देश के लिए जान देकर एक जवान अपने परिवारजनों का सर फ़क्र से ऊँचा तो कर देता है, पर ज़िन्दगी भर के लिए उन्हें एक सदमे में छोड़ जाता है । उनके आँसू आजीवन बहते हैं क्योंकि उनके जीवन में शून्य रह जाता है । परिवार की हालत बद से बदतर हो जाती है ।

ऐसा ही कुछ हुआ सरोज बाबू और उनके परिवार के साथ जिससे यह परिवार दुःख के समन्दर में डूब गया । सरोज बाबू के परिवार में उनकी पत्नी, दो बेटे और एक बेटी है । सरोज बाबू एक कांस्टेबल थे और इस आमदनी से गुज़ारा हो जाता था । वह पूरी निष्ठा और ईमानदारी से अपना काम करते थे । एक चोर को पकड़ने की प्रक्रिया में उनके पैरों में गोली लग गई और वह अपंग हो गए । इस कारण उनकी नौकरी चली गयी । परिवार की आर्थिक हालत ठीक न होने के कारण बड़े बेटे ने ज़्यादा पढ़ाई नहीं की और

किसी तरह एक प्राइवेट कंपनी में नौकरी ढूँढ ली । छोटे बेटे सुरेश का मन पढ़ाई में नहीं लगता था । उसने किसी तरह बी. ए. की डिग्री हासिल की पर नौकरी नहीं ढूँढ पाया । उसका मन हमेशा खेल-कूद, समाज सेवा और गाँव के सुख-दुख में शामिल होने में लगता था । सरोज बाबू अक्सर उसे नौकरी न मिलने के लिए डांटा करते थे । अपने पिता का गंभीर और कठोर चेहरा देखकर सुरेश डरता था और अपनी समस्या का ज़िक्र उनसे कभी नहीं करता था । सुरेश को धीरे-धीरे ये लगने लगा कि उसके पिताजी उससे प्यार नहीं करते थे । सुरेश शरीर से बलिष्ठ और तंदुरुस्त था । देश सेवा में भी उसका मन लगता था । इसलिए उसने भारतीय सेना में भर्ती होने का निर्णय लिया । सेना में बहाली के लिए उसने परीक्षा दी और सफल हुआ । सेना में नौकरी मिलने के ख़बर से वो अत्यंत खुश हुआ और ये ख़बर अपने घर वालों को दिया । यह ख़बर सुन घर के सभी सदस्य थोड़े दुखी हो गए सिवाय सरोज जी के । वह चाहते थे कि सुरेश जो भी काम करे पूरी निष्ठा और ईमानदारी से करे । उनको इस बात का गर्व था कि उनका बेटा देश के लिए लड़ने जा रहा जा रहा था, पर साथ में ये डर भी था कि बेटा कहीं देश के लिए शहीद न हो जाए ।

गाँव में पंकज नामक एक युवा का सुरेश घनिष्ठ मित्र था । वह अपनी माता-पिता का इकलौता लड़का था । वह भी सुरेश के साथ भारतीय सेना में भर्ती हो गया । पंकज के

माता-पिता को उनके बेटे का यह निर्णय अच्छा नहीं लगा । अपने इकलौते बेटे को मौत के मुँह में जाते देख वह दोनों व्याकुल हो उठे । यह देख सुरेश ने उन्हें समझाया “काकी, पंकज और मैं दोनों नौकरी करने जा रहे हैं, देश के लिए लड़ेंगे । हमारा विजय तुम्हारा विजय होगा । सरकार हमें अच्छा वेतन रहने की व्यवस्था और इज़्जत दे रही है । मैं तुम्हारे बेटे को कुछ होने नहीं दूँगा । वह तुम्हारे पास वापस लौटेगा ।” पंकज के माता-पिता सुरेश पर पूरा भरोसा करते थे, इसलिए उन्होंने खुशी-खुशी उसे सुरेश के साथ कश्मीर भेज दिया । दोनों के जाने पर सब दुखी थे सिवाय सरोज बाबू के जो हमेशा की तरह गंभीर और अविचलित थे । सुरेश के मन में अपने पिता को लेकर पहले से ही दुख था और उनका यह व्यवहार देखकर उसको यह विश्वास और भी मजबूत हो गया कि वह उससे प्यार नहीं करते ।

भारतीय सेना में सुरेश और पंकज को कठिन परिश्रम और अभ्यास करना पड़ा और जल्द ही उनकी नियुक्ति हो गई । उन दोनों ने परिवार का मोह छोड़कर काम में मन लगाया और समय-समय पर फ़ोन या चिट्ठी से घरवालों की ख़बर लेते रहते थे । कभी-कभी सुरेश को अपने पिताजी की याद आती थी । पिताजी की उदासीनता और गंभीरता के लिए सुरेश बहुत दुखी था । उसका यह भ्रम तब दूर हुआ जब एक बार फ़ोन पर उसकी बहन ने बोला कि जब वो घर छोड़कर जा रहा था तब उसके पिताजी भगवान के सामने बैठकर रो रहे थे और बोल रहे थे— हे भगवान! मेरा बेटा जिस नौकरी में जा रहा है, उसके लिए मैं गर्वित हूँ । लेकिन मुझे पता है इस नौकरी में उसकी जान भी जा सकती है । मेरे बेटे को शक्ति देना की देश के लिए जी-जान लगाकर लड़ें लेकिन उसके जान को ख़तरे में मत डालना । बहन की बात सुनकर सुरेश की आँखों से आँसू बहने लगे और ऐसा

लगा कि वर्षों का अभिमान पिघल रहा था । अब सुरेश के मन में अपने पिता के लिए श्रद्धा, भक्ति और सम्मान और बढ़ गया । अब वह जब भी घर पर फ़ोन करता तो सबसे ज्यादा अपने पिता से ही बात करता था ।

समय के साथ दोनों दोस्त अपनी नौकरी में आगे बढ़ने लगे । जब भी छुट्टी मिलती, दोनों साथ में घर आते और अपने परिवार एवं गाँववालों से मिलकर जाते । दोनों परिवारों की आर्थिक अवस्था भी धीरे-धीरे सुधरने लगी । अपने परिवार एवं गाँववालों के लिए सुरेश एक उदाहरण बन चुका था । इसी बीच सुरेश ने पंकज से अपनी बहन से शादी करने का प्रस्ताव रखा जिसे पंकज ने खुशी से मान लिया । दोनों की दोस्ती अब रिश्तेदारी में बदल गई । बेटी की शादी के बाद सरोज बाबू की फ़िक्र भी थोड़ी कम हुई पर अब वह सुरेश की शादी के लिए व्यस्त होने लगे । लेकिन सुरेश अभी शादी के लिए तैयार नहीं था । चुकी उसके बड़े भाई का रोज़गार ज्यादा नहीं था, इसलिए अपने माता-पिता के साथ बड़े भाई, भाभी और बच्चों का भार भी सुरेश पर ही था । वह परिवार की आर्थिक अवस्था सुधरने के बाद ही शादी करना चाहता था । लेकिन इससे सरोज बाबू खुश नहीं थे । इसे देख सुरेश की माँ बहुत दुखी होती थी । सुरेश अपनी माँ को हमेशा खुश देखना चाहता था । जब भी छुट्टियों में घर आता तो अपनी माँ के लिए साड़ी और तोहफ़े लेकर आता था । शादी के बाद माँ खुश रहेगी या नहीं और आर्मी की नौकरी में जान का ख़तरा, यही सोचकर उसने अपनी माँ को शादी के लिए मना कर दिया था । लेकिन माँ तो माँ है । उन्हें लगता था कि बेटे की शादी हो जाएगी तो वह खुश रहेगा और बेटे की खुशी के आगे उनके लिए कुछ भी नहीं था । माँ के ज़िद के सामने सुरेश झुक गया और शादी के लिए हामी भर दी । घरवालों ने पड़ोस की ही एक लड़की को

चुना जो सुरेश की माँ का देखभाल ठीक से कर सके। देखते ही देखते छुट्टियाँ खत्म हो गई। सुरेश ने अगली छुट्टी में आकर विवाह करने का वादा किया।

समय आतंकवाद का था इसलिए सुरेश और उसकी युद्ध दल हमेशा किसी न किसी हमले में शामिल होते थे। इधर गाँव में दोनों परिवार टीवी, फ़ोन और अख़बार के ख़बरों पर निर रखते थे। उनका हर लम्हा भय और चिंता में बीतता था। जम्मू कश्मीर के पुलवामा में हुए आतंकी हमले के बाद जवानों के परिवारजन शक्ति में नहीं रह पाते थे। लेकिन सुरेश के पिता को अपने बेटे पर पूरा भरोसा था क्योंकि वह युद्धविद्या में माहिर था। सेना के सभी ऑफिसर्स सुरेश से काफी खुश थे और वह सेना के कई पुरस्कारों से सुसज्जित था। कुछ दिनों में सुरेश की छुट्टी आनेवाली थी लेकिन कुछ आपातकालीन परिस्थिति के लिए उसकी छुट्टी को विलंबित कर दिया गया। उसने अपने घरवालों को फ़ोन से सूचित किया कि जम्मू-कश्मीर से दो सौ किलोमीटर दूर एक जगह पर स्थिति बहुत गंभीर थी इसलिए उसकी टुकड़ी को वहाँ भेजा जा रहा था एवं परिस्थिति ठीक होते ही वह घर आ जाएगा। उसने वादा किया था कि इस बार वह बच्चों और अपने पिताजी के लिए उनकी मनचाही चीज़ लेकर आएगा। अपनी माँ को उसकी बहु देकर और गाँव के पानी की समस्या सुलझाकर जाएगा। लेकिन सुरेश और पंकज के परिवारजन विचलित थे। वह हर समय टीवी के सामने बैठकर समाचार सुनते रहते थे। फिर कुछ दिन बाद उन्हें पता चला कि जम्मू-कश्मीर में एक एनकाउंटर में कई आतंकवादी मारे गए हैं पर उनमें से दो-तीन बच गए हैं जिनकी खोज जारी है। यह सुनकर दोनों के परिवारवालों को थोड़ा आश्वासन हुआ कि पंकज और सुरेश ठीक होंगे, क्योंकि इस मुठभेड़ में कोई भारतीय नहीं मरा था।

दो दिन बाद एक ख़बर आई कि जम्मू-कश्मीर के आतंकी हमले में इलाहाबाद के सुरेश शर्मा की मौत हो गई है। इस ख़बर से सारे देश में मातम का माहौल छा गया। सुरेश के परिवारजन इस ख़बर को मानने के लिए तैयार नहीं थे। सुरेश का रण-कौशल एवं तत्परता अव्वल दर्जे का था, इसलिए कोई ये मानने को तैयार नहीं था कि सुरेश मर सकता है। सुरेश के परिवार पर मानो दुखों का बादल श गया था। सुरेश की माँ अपने बेटे का नाम पुकारते-पुकारते बार-बार बेहोश हो जा रही थी और सरोज बाबू एक पत्थर की तरह एक जगह बैठकर भगवान के सामने रो रहे थे। वह बार-बार भगवान से यह पूछ रहे थे कि उसने उनके बेटे को क्यों छिन लिया। सुरेश के घर से जाने के 2 - 3 दिन बाद उसका मृत शरीर उसके घर वापस आया। साथ में पूरा गाँव, मंत्री, नेता नारा लगाते हुए चल रहे थे "जब तक सूरज चाँद रहेगा, सुरेश बाबू अमर रहेगा। सबके आँखों में आँसू और दिल में प्रतिशोध की अग्नि जल रही थी। देश का एक जवान, गाँव का एक होनहार बेटा और परिवार का चिराग सदा के लिए चला गया। मंत्री और नेताओं के आश्वासन सुनते-सुनते सरोज बाबू थक चुके थे। जब सुरेश का अंतिम संस्कार हो रहा था, तब वहाँ का दृश्य बहुत ही दुःखद था। भावविमुख होकर गाँववाले बोलने लगे कि हम भी देश के लिए लड़ेंगे और सुरेश के मौत का बदला लेंगे आतंकवादियों से। ठीक उसी समय पंकज वहाँ पर रोते-रोते पहुँचा और बोला कि असल में सुरेश मुझे बचाने के लिए अपनी जान दे गया।

जब एनकाउंटर खत्म हुआ तो दोनों दोस्त अपने बेस कैम्प वापस आ रहे थे। तभी अचानक से दो आतंकवादियों ने हमला कर दिया। उनमें से एक को तो सुरेश ने मार गिराया पर दूसरा पंकज को निशाना बना रहा था। तभी सुरेश पंकज को बचाने के लिए उसके सामने कूद गया और

अपने सीने पे गोली ले ली। मरते वक्रत उसने पंकज को अपने पास बुलाकर कहा मैंने काकी को वचन दिया था कि तुझे कुछ नहीं होने दूँगा। ईश्वर की कृपा से तू बच गया। मेरे माता-पिता को यह बताना कि इस जन्म में अंत तक मैं उनका साथ नहीं दे पाया, पर अगले हर जनम में मैं उनके यहाँ पैदा लूँगा। मैं खुश हूँ कि मैंने अपने पिता को दिया वचन निभाया और देश के लिए निष्ठापूर्वक लड़ा। मेरे बाद मेरे परिवार का ख्याल रखना। यह सुनकर सरोज बाबू और उनके सारे परिवार के सदस्य फूट-फूटकर रोने लगे। यह देख वहाँ जितने लोग थे वो जवानों की मृत्यु का बदला लेने और आतंकवाद से लड़ने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध हो गए। अगर

एक जन-समुदाय किसी भी कार्य को करने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध हो जाएं तो चाहे अच्छा हो या बुरा, वो कार्य होकर ही रहता है। इतने सारे लोगों को प्रण लेते देख सरोज बाबू को लगा कि उनके सामने हज़ार-हज़ार सुरेश खड़े थे। यह देख उनको गौरव की अनुभूति हुई और वो सुरेश के मृत शरीर पर गिर पड़े। काफी देर तक सरोज बाबू सुरेश के मृत शरीर पर पड़े रहे और उठे नहीं। जब लोग उन्हें उठाने गए तो देखा कि वो दम तोड़ चुके थे। बाप-बेटे के बीच का भ्रम, अभिमान, स्वाभिमान सब पिघल कर एक हो गए। ऐसा लग रहा था कि दो देश प्रेमियों की आत्मा आनंद और उल्लास से, बिना किसी की परवाह करते हुए, एक साथ नीले अंबर की ओर जा रहे थे।

ॐॐॐ

ये कैसे हैं हम हिंदुस्तानी

श्री गंगाधर पंडा

वरि. लेखापरीक्षक / कार्यालय स्थापना



ये कैसे हैं हम हिंदुस्तानी,
ये कैसे हैं हम हिंदुस्तानी,
धर्म के नाम से जहाँ होता है,
हर कहीं बेचैनी, हर कहीं बेचैनी
ये कैसे हैं हम हिंदुस्तानी (1)

हिंदु हो या मुसलमान, जैन हो या क्रिश्चियन,
जो भी हों हम, एक ही माता के हैं संतान,
बच्चे तो खेलते हैं, करते भी हैं शैतानी,
कब देखा है आपस में उनकी, मार-काट, आगजनी,
लेकिन हम हैं वो, लेकिन हम हैं वो,
जो करते हैं नित्य नई नादानी.
ये कैसे हैं हम हिंदुस्तानी (2)

फूल हैं अलग-अलग, पर एक ही है चमन,
मंदिर में हो या मस्जिद में, हर फूल का है सम्मान,
फिर भी क्यों होती हैं, दूसरे को परेशानी
ये कैसे हैं हम हिंदुस्तानी (3)

मंदिर हो या मस्जिद, गुरुद्वारा हो या गिरजा,
अल्ला हो या राम हो, एक ही भगवान की है पूजा
पर समझ से परे है, पर समझ से परे है,
दंगाइयों की बातूनी, जो खड़ी कर देते हैं खासी परेशानी

ये कैसे हैं हम हिंदुस्तानी (4)
देखो उजड़ न जाए कभी, अपना ये चमन,
मिली है आज़ादी मुश्किल से, न भूलो वो बलिदान,
मिलजुल के न रह कर, कर रहे क्यों हैं दुश्मनी ?
ये कैसे हैं हम हिंदुस्तानी (5)

ॐॐॐ

आधुनिक मनुष्य के लिए विश्राम एवं ध्यान

श्रीमती अंकीता कुमारी अजय

पत्नी- श्री शैलेंद्र कुमार,
वरि. अनुवादक / हिंदी प्रकोष्ठ



क्या यह पृथ्वी अपनी पूरी दम-खम से घूम रही है? क्या मौजूदा हालात आपको छिन्न कर रहा है? ये कुछ ऐसे सवालों के गुच्छे हैं जो उच्च रक्तचाप से पीड़ित रोगियों से पूछे जाते हैं। दुर्भाग्यवश यह उच्च रक्तचाप वर्तमान दूषित जीवन शैली का ही दुष्परिणाम है। इस बीमारी के लिए जो उपचारी सुझाव है वह है - 'ध्यान' जिसका प्रायः अपेक्षित परिणाम नहीं मिल पाता है। इसका कारण पतंजलि के योग सूत्र से प्राप्त किया जा सकता है। योग के पूर्ण तक पहुँचने के दौरान पतंजलि ने यह महसूस किया कि शरीर तथा सदा विचलित मन के लिए एक सफाई प्रक्रियाएँ होती है जो आज के Jet Age ध्यान में लघु परिवर्तित है।

वर्तमान समय में विश्राम एवं ध्यान यह प्रायः एक विभ्रान्ति बना रहता है। पतंजलि के अनुसार, कोई भी तनावग्रस्त व्यक्ति द्वारा ध्यान नहीं किया जा सकता है। ध्यान के लिए सर्वप्रथम पूर्ण विश्राम की आवश्यकता होती है। पतंजलि यह भी इंगित करता है कि शरीर एवं दिमाग दोनों ध्यान के लिए विक्षुब्ध कारक हो सकते हैं जब तक कि कोई इन्हें साफ करने के लिए दिए गए तरीकों को नहीं अपनाता है। इस प्रकार, पतंजलि ने मानव शरीर एवं मन को जटिल कहा है। पतंजलि के अनुसार, दर्द से भरा शरीर एवं विचलित मन द्वारा ध्यान संभव नहीं है। अतः अष्टांगिक मार्ग के पहले एवं दूसरे रास्ते में यम और

नियम है। यह सब मन की अतिद्रिय दृष्टि को प्राप्त करने में सहायक होते हैं। तीसरे स्थान पर आसन होता है जिसके जरिए मनुष्य शारीरिक नियंत्रण को प्राप्त करता है जिससे तंदरुस्ती एवं स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। इसके पश्चात् प्राणायाम के द्वारा श्वास पर नियंत्रण हेतु प्रयास किया जाता है क्योंकि श्वास व्यक्ति के मानसिक स्थिति को दर्शाता है।

मानसिक, शारीरिक एवं स्वास्थ्य को नियंत्रित करने के पश्चात् अगला चरण है इंद्रिय को नियंत्रित करना जो भटकावयुक्त साबित हो सकता है जिससे व्यक्ति के ध्यान करने के लक्ष्य में बाधा उत्पन्न हो सकती है। पतंजलि हमें यह बताता है कि प्रत्याहार जिसे इंद्रिय पर नियंत्रण कहा जा सकता है, एक अगला चरण है जो इंसान को अविश्वसनीय तरीके से मजबूत बनाता है जिस तरह कछुए से पाँचों अंगों को खींच लेने पर वह कठोर हो जाता है। इत्तेफ़ाकन हमारे ज्ञानेंद्रियाँ भी पाँच हैं। अतः सभी इंद्रियों पर नियंत्रण कर इंसान सभी को एक दिशा में केंद्रित करने के लिए निर्देशित कर सकता है जिसे पतंजलि धारणा अथवा एकाग्रता कहता है। जब ध्यान परिपक्व होता है तो इंसान स्वयं को परिस्थिति के अनुसार कर्ता अथवा विषय के रूप में अपने आप को पहचानता है जब वह कर्ता को बिना इसमें शामिल हुए उसे समीक्षा करता है। जब कर्ता के साथ नजदीकी स्थापित हो तो इसे ध्यान कहा गया है जिसे अंग्रेजी में मेडिटेशन कहा जाता है।

लगातार ध्यान की अवस्था बृहद होकर आगे समाधि में परिवर्तित होती है जिसे अनंत सुख अथवा सत्त-चित्त-आनंद कहते हैं। इसी दुनिया में इसे पतंजलि के अष्टांग योग की सहायता से अनुभव किया जा सकता है। स्वामी विवेकानंद की माने तो यह वैज्ञानिक विकास का सबसे आदर्श एवं वास्तविक स्वरूप है और इसे किसी भी व्यक्ति द्वारा किया जा सकता है। इसे समाज में रहकर भी करना संभव है। अतः वैसे किसी व्यक्ति के लिए जो तनाव से पीड़ित हो उसे एक अनुशासनात्मक जीवन को धारण कर विश्राम की अवस्था को प्राप्त करने के लिए

सतत प्रयत्नशील होना चाहिए। विश्राम की ओर एक चेतन प्रयत्न हम लोग जैसे आधुनिक मनुष्यों के लिए एक बेहतर शॉर्टकट है, साथ ही ध्यान, हम आधुनिक मानव के आध्यात्मिक विकास के परिदृश्य को विकसित करता है अर्थात् एक चिंताग्रस्त तनावयुक्त व्यक्ति ध्यान में मग्न नहीं हो सकता जबतक कि वह पहले अचेतन की अवस्था में नहीं आ जाता।

नोट : यह रचना योगाचार्य श्री आनंद जी द्वारा लिखित The Modern Man Must Relax and Meditate का हिंदी रूपांतरण है।



सपना

सुश्री मीनू पंवार

लेखापरीक्षक / कार्यालय स्थापना

जब बढ़ी नजदीकियाँ
और मेरे दिल का तार जुड़ा,
तुम्हारे पास आने को,
मेरा हर एक कदम मुड़ा,
समंदर से दिखे तुम
और मेरा दिल उसमें डूबा,
तेज हवा में रात भर,
एक सपना मंजर-मंजर उड़ा,
फिर जरा-जरा सी बात पर,
हर एक वादा टूटा,

सुनने-सुनाने से करी तौबा,
और बाते बनाना छूटा,
मासूम सा था मेरा दिल,
जो एक झटके में टूटा,
तब नींद गई टूट,
क्योंकि सपना था वो झूठा,
अब फर्क नहीं पड़ता है,
तू खुश है या रुठा,
क्योंकि बदल गई है मेरी मंजिल,
तेरी राह से मेरा आना-जाना छूटा।



मैं अपने देश के लिए क्या कर सकता हूँ ?

श्री गिरराज शरण अग्रवाल

वरि. अनुवादक / हिंदी प्रकोष्ठ



हम सभी भारतवासी हमारे भारतवर्ष को एक श्रेष्ठ, समृद्ध, आदर्श एवं विकसित राष्ट्र के रूप में देखना चाहते हैं। हम प्रायः इस हेतु सभी प्रयासों की उम्मीद सरकार से करते हैं।

प्रायः यह भी देखा जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि दूसरा व्यक्ति अपना आचार-विचार एवं व्यवहार बदल ले किंतु स्वयं जैसा है वैसा ही रहना चाहता है।

किंतु यह हम सभी अच्छी तरह से जानते हैं कि राष्ट्र को श्रेष्ठ एवं विकसित बनाने के लिए केवल शासकीय एवं कुछ व्यक्तिगत प्रयास पर्याप्त नहीं होते हैं। इस हेतु प्रत्येक व्यक्ति का योगदान आवश्यक है। मेरा मत है कि प्रत्येक व्यक्ति निम्नलिखित प्रयासों के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में योगदान दे सकता है :

1. जनसंख्या नियंत्रण : विकसित राष्ट्र बनने हेतु सीमित जनसंख्या का होना अति आवश्यक है। इसमें देश के प्रत्येक व्यक्ति का योगदान अपेक्षित है क्योंकि सरकार द्वारा किए गए विकास कार्य को बढ़ी हुई जनसंख्या खत्म कर देती है और देश वहीं का वहीं खड़ा रह जाता है। इस संबंध में इस स्वतंत्रता दिवस पर हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा भी इस मुद्दे की ओर ध्यान आकर्षित किया गया था।

‘यद्यपि हमारे समाज के उच्च वर्ग एवं मध्यम वर्ग में इस संबंध में जागरूकता पैदा हुई है

किंतु इसे अमली जामा पहनाने हेतु इसे समाज के निम्न वर्ग द्वारा अपनाया जाना अति आवश्यक है।

2. पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन : हम सभी अच्छी तरह से जानते हैं कि हम मानवों को रहने के लिए इस पृथ्वी ग्रह के अतिरिक्त कोई अन्य स्थान नहीं है इसके बावजूद हम पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन के प्रति आँख मूंद के बैठे हुए हैं। इसका ताजा उदाहरण दिल्ली की वायु प्रदूषण की समस्या है।

इस हेतु हमें सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम को अपनाना होगा। इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु स्कूलों, कॉलेजों एवं व्यावसायिक घरानों का योगदान महत्वपूर्ण हो सकता है साथ ही हमें यह शपथ लेनी होगी कि हम हमारे प्रत्येक जन्मदिन एवं विवाह वर्षगांठ आदि अवसरों पर न केवल पौधारोपण करें बल्कि उन पौधों का लालन-पालन अपने बच्चों की तरह करें।

3. जल संरक्षण : जल संरक्षण के विषय के संबंध में कई बार हम लोग पढ़ चुके हैं कि अगला विश्वयुद्ध जल के होगा। इसका कारण है कि पानी का अंधाधुंध उपयोग एवं जल संरक्षण के प्रति उदासीनता।

जल संरक्षण के प्रति उदासीनता का ताजा उदाहरण इस वर्ष देश के कई हिस्सों में बाढ़ के रूप में देखा जा सकता है।

जल संरक्षण में रेन वाटर हार्वेस्टिंग महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है । इस हेतु प्रत्येक व्यक्ति को शपथ लेनी होगी कि वह घर का निर्माण करते समय ही रेन वाटर हार्वेस्टिंग की व्यवस्था करेगा साथ ही घरों में उपयोग किए जा रहे जल को रिसाइकिल करेगा ।

4. **डिजिटल पेमेंट** : हम सभी प्रायः लेन-देन नकद में करना पसंद करते हैं किंतु अब हमें इस आदत तो बदलकर सौ प्रतिशत लेन-देन डेबिट/क्रेडिट कार्ड, इंटरनेट बैंकिंग, चैक तथा यूपीआई के माध्यम से करना चाहिए । भुगतान डिजिटल माध्यमों से होने पर काले धन पर रोक लगेगी साथ ही सरकार की आय भी बढ़ेगी जो देश विकास में सहायक होगी ।
5. **परोपकारिता** : हम सभी जानते हैं कि समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग आधारभूत सुविधाओं से वंचित है । यदि हम सभी अपनी मासिक/वार्षिक आय का कुछ निश्चित प्रतिशत वंचित वर्ग के बच्चों की पढ़ाई एवं स्वास्थ्य/उनके सामाजिक दायित्वों के निर्वहन आदि पर व्यय कर समाज में बड़ा बदलाव

ला सकते हैं ।

6. **शारीरिक स्वास्थ्य** : हमारी बदली हुई जीवन-शैली हमारे स्वास्थ्य की सबसे बड़ी दुश्मन है । विज्ञान ने हमें इतनी अधिक सुविधाएं उपलब्ध करा दी हैं कि जीवन से शारीरिक श्रम खत्म हो गया है । यह सर्वविदित है कि हम जीवन का आनंद केवल तभी उठा सकते हैं हम पूर्ण रूप से स्वास्थ्य हों । अतः हमें पर्याप्त शारीरिक श्रम एवं उचित आहार का सेवन कर हमें स्वस्थ रहने का प्रयास करना चाहिए ।
7. **मानसिक स्वास्थ्य** : यह भी सत्य है कि आधुनिक जीवन में हमारा शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य भी प्रभावित हुआ है । हम सभी ने तनाव को अपने जीवन का हिस्सा मान लिया है । तनाव से बचने के लिए हमें अपनी इच्छाओं एवं अपेक्षाओं को सीमित करना होगा तथा संतोष एवं धैर्य के गुणों को धारण करना होगा । इसके अतिरिक्त अध्यात्म, योग, प्राणायाम एवं धार्मिक तथा सकारात्मक विचार वाली पुस्तकों का नित्य अध्ययन भी तनाव को कम करने में सहायक होगा ।



Save The Water



एक कदम चंदका की ओर

सुश्री तितली पंडा, श्री गंगाधर पंडा

वरि. लेखापरीक्षक / कार्यालय स्थापना



वन गरीबी में कमी, आर्थिक विकास और रोजगार में योगदान देते हैं और कृषि, ऊर्जा और पानी जैसे प्रमुख क्षेत्रों को बनाए रखने के लिए आवश्यक पारिस्थितिकी तंत्र (इको सिस्टम) की सेवाएं उत्पन्न करते हैं। यह जलवायु परिवर्तन पर देशों की प्रतिबद्धता में भी मदद करते हैं। वन सामग्री ग्रामीण आबादी के लिए एक महत्वपूर्ण गुप्त खजाने की तरह जो कि कई लोगों को अत्यधिक गरीबी होने से बचाती है। जो लोग घने जंगलों के भीतर या निकट रहते हैं, वे उनके निर्वाह और आय के लिए उन पर निर्भर रहते हैं। वन भी अपना अस्तित्व के लिए उन पर निर्भर हैं।

चंदका-डमपडा वन्यजीव अभ्यारण्य हरे-भरे पौधे और समृद्ध जंगल का एक मिश्रण है जो दुर्लभ और लुप्तप्राय वनस्पतियों और वन्यजीवों के लिए एक सुरक्षित आश्रय है। यह सुरम्य अभ्यारण्य ओड़िशा की राजधानी भुवनेश्वर शहर के बाहरी इलाके में स्थित है जो प्रकृति की गोद में एक सुकून भरे समय उपलब्ध वादा करने का है। ठहराव, आराम और एक निश्चित रूप से वन्यजीव के साथ मुलाकात के क्षणों को संजोने के लिए चंदका-डमपडा वन्यजीव अभ्यारण्य निश्चित तौर पर खरा उतरता है।

चंदका-डमपडा वन्यजीव अभ्यारण्य खोर्धा और कटक दो जिलों में फैला हुआ है जिसमें 193.39 वर्ग

किमी का क्षेत्र शामिल है। चंदका वन्यजीव प्रभाग की वनस्पतिया और वन्यजीव शानदार है। चंदका बांस, साल, टीक, कुंभी, अशोक जैसे वनस्पतियों से समृद्ध है। हाथी इस वन के पारिस्थितिकी तंत्र की वन्यजीवों का प्रमुख प्रजाति है और तेंदुआ, लकड़बग्घा, हाथी, भालू, आलसी भालू, भौंकने वाले हिरण, मोर तथा कई अन्य पक्षियों ने वन्यजीव की शोभा को बढ़ाया है।

यह जंगल बिना किसी लागत के हमें सांस लेने के लिए 260 बिलियन पाउंड की ऑक्सीजन गैस प्रदान कर रहा है। अगर यह जंगल हमारे बाहरी फेफड़े के रूप में न होता तो हमें सांस लेने में तकलीफ हो सकती थी। अभ्यारण्य के अंदर गाँव में रहने वाले लोग और जंगल के आसपास की झुगियों में रहने वाले लोग अपने दैनिक जीवन यापन के लिए खेती और लकड़ी के संग्रहण पर निर्भर हैं। इसका मतलब इन लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जंगल को प्रति वर्ष अपने 300 - 400 और पेड़ खोने होंगे। यदि सतत विकास और वन संरक्षण से संबंधित जागरूकता नहीं होने की स्थिति में जंगल 2025 - 2030 तक समाप्त हो जाएगा। इसलिए सरकार उचित मुआवजे के साथ अभ्यारण्य के बाहर उनके पुनर्वास की योजना बना रही है।

भुवनेश्वर वन क्षेत्र से लेकर कटक वन क्षेत्र तक

जानवरों (विशेष रूप से हाथी) अपना प्रवास के दौरान मानवीय पर्यावरण की आधुनिकता का सामना करने के लिए असामान्य महसूस कर रहे हैं (जैसे स्ट्रीट लाइट, कंक्रीट सड़क आदि ।) वन संसाधनों की कमी के कारण उनके निवास स्थान को भी नुकसान पहुंचा है । एक हाथी को रहने के लिए 200 वर्ग मीटर क्षेत्र और पीने के लिए 200 लीटर पानी की आवश्यकता होती है । चारे के लिए बड़ी मात्रा में टहनियाँ और पेड़ की शाखाएँ आवश्यक हैं । जब किसी को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार आवश्यक संसाधन नहीं मिलेंगे, तो वह आवश्यकताओं की पूरा करने के लिए संसाधनों की खोज करने के लिए अपने निवास स्थान से बाहर आ ही जाएगा । यह हाथियों के लिए भी लागू होता है । जब हाथियों को वह नहीं मिल रहे हैं तो वे जंगल से शहरी क्षेत्रों की ओर निकल रहे हैं ।

अतः आइए हम इस अनूठे पारिस्थितिकी तंत्र की जैव विविधता के संरक्षण के संदेश का प्रसार करें और

नीचे उल्लेख किये गये उपचारी उपायों का पालन करते हुए उस दिशा में कार्य करें ।

- गैर-पारंपरिक और नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग करने के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जैसे कि सौर ऊर्जा ।
- स्थानीय लोगों या वनवासियों को पर्याप्त रोजगार मिलना चाहिए ताकि उन्हें अपनी आजीविका के लिए जंगल पर निर्भर न होना पड़े ।
- कानून का उचित कार्यान्वयन होना चाहिए ताकि लोगों को पेड़ काटने या जानवरों का शिकार करने के लिए डर हो ।
- कम उम्र से स्कूलों में प्रकृति की शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि बच्चे कम उम्र में ही जागरूक हो सकेंगे ।
- छात्रों को समय-समय पर इनको टूर पर ले जाना चाहिए ताकि उन्हें वन तंत्र के महत्व का पता चले ।

२०२०



अचर्चित (The Unsung)

श्री शैलेंद्र कुमार

वरि. अनुवादक / हिंदी प्रकोष्ठ



दिसंबर 2018 में द इंडियन एक्सप्रेस में इशीता सेनगुप्ता का एक लेख आया जिसका शीर्षक था “Are translators Cocreators of a novel ? Jasmine Days’ author and it’s translator weigh in”. पोलैंड के एक उपन्यासकार Olga Tokarczuk को उनकी कृति Flights के लिए अंतरराष्ट्रीय पुरुष बुकर प्राइज से सम्मानित किया गया। मुख्य बात ये है कि इस रचना को Jennieffer Craeft द्वारा अनुदित किया गया था। द इंडियन एक्सप्रेस के इसी लेख में आगे अनुवाद के संबंध में कहा गया है कि यह एक जोखिम भरा कार्य है। एक नई आवाज जो लेखक के साहित्यिक संसार में धीरे से प्रवेश करती है एवं लेखक द्वारा लिखे गए उसी कहानी को उसके मूल भाषा से बिल्कुल अलग भाषा में सुनाती है। इस दौरान यह सांस्कृतिक एवं भाषायी अवरोधों को तोड़ती है या कम से कम ऐसा करने का प्रयास करती है और फिर बिना शोर किए निकल जाती है। अनुवाद में मुख्य रूप से मूल में लिखे रचना के पलों को नयी स्याही द्वारा मुक्त कर दिया जाता है एवं विदेशी भाषा या अनुवाद की भाषा द्वारा चुने गए शब्दों को इस तरह पिरोया जाता है कि अनुवाद में बिल्कुल मूल लेख जैसा ही रंग चढ़ जाता है। अनुवाद की उपयोगिता भोजन में नमक एवं जीवन में श्वास लेने की प्रक्रिया जैसा अलक्षित रहने वाली प्रक्रिया है। आप देखिए क्या एक भारतीय कभी भी फ्रांस अथवा रूस के उच्च साहित्य को पढ़ सकता है— नहीं।

जब तक विश्व की भाषाओं का अनुवाद हमारी भाषा में नहीं होता हम उस भाषा के स्वाद का आनंद नहीं ले सकते। इसका मतलब है कि अनुवाद का न होना हमें वंचित रखता है उन बेशकीमती साहित्यिक, वैज्ञानिक, सामाजिक, राजनैतिक अलंकारों से जिसके लाभ से दूसरे अपनी गुणवत्ता बढ़ा रहे हैं। संस्कृत भाषा में जन्मी रामायण को वर्तमान समय में संस्कृत न जानने वाले भी बखूबी जानते और समझते हैं जिसका कारण केवल यह है कि इसको हमें अपनी भाषा में अनुदित कर प्रस्तुत किया गया है। रामायण पर हिंदी भाषा के नाटक का ही असर है कि आज लोग अपनी पौराणिक कथा से वाकिफ हैं।

Jessica Moore जो फ्रेंच लेखक Maylis de Kerangal के Mend the Living के अनुवाद के लिए वर्ष 2016 के अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार के लिए नामित रही है उन्होंने एक कला पत्रिका “Canadian Art” के एक लेख में लिखा है कि—“अनुवाद एक गहरा रचनात्मक कार्य है परंतु इसमें मूल कार्य से एक बड़ा अंतर है कि अनुवादकों को एक विशाल कोरे कागज का सामना नहीं करना पड़ता है। मतलब खाका पहले से खींचा जा चुका होता है। मुझे लगता है कि शब्द मेरे हैं और लय उनकी”।

Tejaswini Niranjana द्वारा कन्नड़ से अंग्रेजी में अनुवाद किए गए Jayant Kaikini की No Present

Please को DSC (International Literary Prize) पुरस्कार के लिए shortlist किया गया है साथ ही Benyamin की उपन्यास Jasmine Days जो एक राजनैतिक फेबल है और जिसे Shahanaz Habib द्वारा अनुदित किया गया है को साहित्य के लिए JCB (Indian Literary Prize) प्राप्त हुआ है। इन दोनों अनुवादकों (Tejaswini Niranjana Skeb Shahanaz Habib) ने अनुवाद की प्रक्रिया एवं अनुवाद में आने वाली दिक्कतों के संबंध में कहा है कि अनुवादकों को किसी उपन्यास का सह-रचनाकार भी कहा जा सकता है। अनुवादक Gayatri Spivak ने अनुवाद के बारे में इस लेख में जो कहा है वह काफी उचित प्रतीत होता है। उन्होंने कहा है— “Translation is both necessary and impossible”. अनुवाद को आवश्यक और असंभव कहा गया है शायद यह कहने की कोशिश की गई है कि कोई भी अनुवाद अपने मूल प्रति के भाषायी संस्कृति से भिन्न होती है और इस तरह सांस्कृतिक भिन्नता होने के कारण वो मूल के बराबर कभी नहीं हो सकती।

केरल के मलयालम उपन्यासकार एवं कहानीकार Benyamin ने द इंडियन एक्सप्रेस के साथ हुए साक्षात्कार में यह कहा है कि यह सत्य है कि अनुवाद के दौरान कुछ आवश्यक तत्व अपनी मूल सुंदरता एवं अर्थ खो देते हैं परंतु साहित्य के बड़े कार्यों तक हम बिना अनुवाद के कैसे पहुंच सकते हैं। अनुवादकों के पास कभी कभी कोई विकल्प नहीं होता है। आगे वे यह कहते हैं कि शब्दशः अनुवाद मूल कार्य का वध है। अतः उचित तरीके से संप्रेषित करने के लिए अनुवादकों को आजादी चाहिए ताकि वे मूल कार्य को विस्तृत कर सकें परंतु यह भी

सत्य है कि कुछ अनुवाद मूल कार्य की तुलना में अधिक उत्कृष्ट और सजीव हो उठते हैं। उनका कहना है कि अनुवादकों को सह-लेखक कहा जा सकता है। Benyamin ने लेखक एवं अनुवादक के बीच संबंध के विषय में कहा है कि लेखक यदि जल है तो अनुवादक वाष्प।

सितम्बर 2019 के द टेलीग्राफ में चंद्रीमा एस. भट्टाचार्य का एक लेख आया जिसका शीर्षक था “Translation needs silencing of my mind”। अनुवाद की दुनिया में वी. रामास्वामी शायद एक मात्र ऐसे तमिलियन हैं जो गंभीर बांग्ला साहित्य को अनुवाद करने की जोखिम उठाते हैं। रामास्वामी के बांग्ला अनुवाद करने की कहानी दिलचस्प है। रामास्वामी ने जब बांग्ला लेखक सुबिमल मिश्रा की रचनाओं को अंग्रेजी में अनुवाद करने का निर्णय लिया तब तक उन्हें पता ही नहीं था कि मिश्रा की लेखनी आसान अथवा सुगम नहीं है। उनकी कहानियां समझ से परे होती हैं तथा कहानियों के विषय काफी भयावह होते हैं। वर्ष 2005 में किसी बार में रामास्वामी की मुलाकात एक ऐसे व्यक्ति से होती है जो बातों बातों में यह कह देता है कि बंगाल में पढ़ने लायक कोई लेखक नहीं है... सुबिमल मिश्रा को छोड़कर। पूर्व में हुए मुलाकातों के आधार पर रामास्वामी को इस व्यक्ति के इस निर्णायक कथन पर यकीन हो जाता है और उसी समय इन्होंने सुबिमल मिश्रा को अनुवाद करने का वादा किया। यह एक कठोर निर्णय था। बार में किए गए सारे वादे निभाए नहीं जाते परंतु यह निर्णय फलदायक साबित हुआ। आश्चर्य यह था कि रामास्वामी ने अभी तक कोई भी बांग्ला रचना नहीं पढ़ी थी परंतु आज रामास्वामी एक समर्पित मिश्रा अनुवादक हैं। तमिलियन माता-पिता से जन्में एवं कोलकाता की

संस्कृति में पले बड़े रामास्वामी संत जेवियर कॉलेज, कोलकाता में अर्थशास्त्र के छात्र रहे हैं एवं चार्टर्ड एकाउंटेंट की उच्च शिक्षा के लिए यूनाईटेड किंगडम गए। परंतु उन्हें लगा कि उनके जन्म की प्रवृत्ति यह नहीं है और परिणामस्वरूप वे वापस कोलकाता आकर गरीबों के हक की लड़ाई में अपने आप को समर्पित कर दिया। परंतु शीघ्र ही उन्हें लगा कि वे सबकुछ ठीक नहीं कर सकते और उन्हें यह भी महसूस हुआ कि वे दीवार से अपने सर

को फोड़ रहे हैं। जल्द ही उन्होंने अपने पिता की फैक्ट्री में योगदान दिया। फैक्ट्री उनका प्रोफेशन बना और अनुवाद पैशन। अनुवाद को रामास्वामी के शब्दों में कहें तो—
“Translation is torture. Translation is a solitary and lonely enterprise”

संदर्भ: The Indian Express and The Telegraph

May comment at: [twitter@shailism](https://twitter.com/shailism)



बदलते अपने

श्री विनय सिंह

पति— श्रीमती मोनिका चौहान
कनि. अनुवादक / हिंदी प्रकोष्ठ



दिल दुखा ही तो है, रोकर तमाशा क्या करना,
अपने ही बदल गए है तो गैरों से आशा क्या करना ।
हाथ पकड़कर जो कभी सही राह दिखाया करते थे
दुःखी होता था तो अपनी हरकतों से खूब हंसाया करते थे ।
तकलीफें क्या होती है, उनके साथ कभी पता ही नहीं चलता था,
कुछ इस तरह से वो सब मेरा साथ निभाया करते थे
अब दिल नहीं मिलते हमारे तो फिर दिखावा क्या करना,

अपने ही बदल गए हैतो गैरों से आशा क्या करना ।
दिल आज भी खुश होता है उनसे मिलने में,
बेशक, थोड़ा वक्त जरूर लगेगा अकेले संभलने में,
जानता हूँ, कि दूरियाँ बहुत बढ़ गई है दिलों में,
पर एक जमाना लग जाएगा मुझे अपनी आदतें बदलने में
खैर, माफ कर दिया उन्हें, तो कोई अभिलाषा क्या करना,
अपने ही बदल गए है तो गैरों से आशा क्या करना ।





स्त्री शिक्षा का महत्व

श्रीमती निभा रंजन

पति- श्री आशीष रंजन,
आशुलिपिक / सा.क्षे.-॥

एक आदर्श, सभ्य, सजग समाज वहीं बन पाता है जहाँ सभी शिक्षित हों। खासकर महिला वर्ग को शिक्षा का अधिकार मिलना चाहिए। शिक्षा का जीवन में बहुत महत्व है। यह एक हथियार की तरह है जो कठिनाई से लड़ने में सहायक है। यह सोचने समझने, सही गलत के बीच के अंतर को समझ पाने की शक्ति विकसित करती है। इससे कई अवसरों के मार्ग खुल जाते हैं। साथ ही वे आत्मनिर्भर भी बनती हैं। जो जिंदगी में अच्छे मुकाम पाने में सहायता करती है। यह जरूरी नहीं है कि सिर्फ किताबी शिक्षा का ही ज्ञान होना आवश्यक है। कला, खेलकूद एवं अन्य क्षेत्रों की भी सही जानकारी उन्हें एक अच्छे मुकाम पर पहुंचा सकती है। आज का दौर आधुनिक तकनीक और प्रतियोगिताओं का है जिससे इसके स्वरूप में कई मायनों में बदलाव आया है क्योंकि प्रतियोगिता का सही अर्थ अपने आप से होना है। आजकल ज्यादातर काम मशीनों के माध्यम से होते हैं जिस पर कार्य करने के लिए उसकी समझ होना आवश्यक है और वह तकनीकी ज्ञान से संभव है। स्त्री शिक्षा न केवल घरेलू कामकाज पर आधारित या बच्चों के पालन-पोषण पर निर्भर करता है बल्कि पुरुषों के साथ कंधे से कंधे मिलाकर काम करने को ही सही मायने में स्त्री शिक्षा का महत्व माना जाएगा। तभी इस देश का आर्थिक और सामाजिक विकास हो पाएगा कई वर्षों तक हमारा भारत देशी-विदेशी ताकतों

का गुलाम रहा जिसके कारण नारी शिक्षा को बढ़ावा नहीं मिल पाया है। इसी कारण हमारा भारत देश स्त्रियों की शिक्षा के मामले में आज भी पिछड़ा है। हमारे देश में महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार नहीं मिलने और अन्य सामाजिक कुरीतियों के कारण नारी शिक्षा को बढ़ावा नहीं मिल पाया है। सरकार द्वारा कई ऐसी योजनाएं चलाई जा रही हैं जिसमें महिलाओं के जन्म से लेकर अब तक के विभिन्न प्रकार के होने वाले खर्च जैसे कि टीकाकरण, स्कूली पोशाक, नामांकन साइकिल वितरण जैसी सुविधाएं प्रदान की गई हैं। इसके साथ-साथ मैट्रिक तक की पढ़ाई के लिए अलग राशि प्रदान की जाती है।

स्वास्थ्य संबंधी खर्चों का भी वहन सरकार द्वारा ही किया जाता है कन्या भ्रूण हत्या के मामले ज्यादातर महिलाओं के अशिक्षित होने के कारण भी होते हैं क्योंकि उन्हें परंपराओं और रूढ़िवादी विचारधाराओं की बातों में उलझा कर उनके परिवार वाले उन्हें कन्या भ्रूण हत्या के लिए मना लेते हैं। लेकिन जब महिलाएं पढ़ी-लिखी होंगी तो उसे पता होगा कि बेटा हो या बेटी दोनों समान होते हैं। इसलिए वे कन्या भ्रूण हत्या का विरोध करेंगे और कन्या भ्रूण हत्या में गिरावट आएगी। वर्तमान समय में दहेज प्रथा को बढ़ावा इसलिए भी मिल रहा है क्योंकि अधिकतर युवतियां शिक्षा से वंचित होती हैं इसलिए उनके माता-पिता दहेज देकर उनका विवाह करते हैं। अगर यह

बेटियां पढ़ी लिखी होंगी तो उन्हें दहेज प्रथा जैसी कुरीतियों का सामना नहीं करना पड़ेगा। हमारे देश की लगभग आधी जनसंख्या महिलाएं ही हैं। अगर शिक्षित नहीं होंगे तो कुछ काम नहीं कर पाएंगे जिसके कारण देश की आधी आबादी सिर्फ खाने का काम करेगी जिससे पैसों की बचत कम हो पाएगी और देश पिछड़ता चला जाएगा। आज भी हमारे समाज में बेटियों को पढ़ाना फालतू खर्च माना जाता है जिसके कारण बेटियां पढ़ नहीं पाती हैं और उनका भविष्य अंधकारमय हो जाता है। इसलिए हमें लोगों को जागरूक करना होगा कि एक नारी शिक्षित होने का क्या मतलब होता है। कल्पना चावला, चंदा कोचर,

आशा राय, पीवी सिंधु, साइना नेहवाल जैसी अनेक महिलाओं के उदाहरण हैं जिन्होंने हमारे देश का नाम रोशन किया है। नारी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा चलाई गई योजनाएं— इंदिरा महिला योजना, राष्ट्रीय महिला कोष, सर्व शिक्षा अभियान, महिला तथा बालिका समृद्धि योजना आदि हैं। अगर हमारे देश को आगे बढ़ना है तो हमारे देश के प्रत्येक नागरिक खासकर महिलाओं को शामिल करना होगा। उनके बिना देश का विकास होना संभव नहीं है। अगर उन्हें सही अवसर दिया जाए तो वह पुरुषों से भी अधिक कार्य कर सकती हैं। इसलिए नारी शिक्षा को बढ़ावा देना बहुत जरूरी है।



आज भी याद है

श्रीमती विनोदिनी महाराणा

वरि. लेखापरीक्षक / कार्या. स्था.



बचपन का जमाना, था खुशियों का खजाना,
हमे आज भी याद है...

वो पेड़ों पर चढ़ना और तितलियाँ पकड़ना
वों खेतों में खेलना, और ट्यूबवेल में नहाना
हमे आज भी याद है..

भाई-बहन से लड़ना, फिर मम्मी-पापा से पिटना



फिर पिटकर रोना, रोते-रोते सो जाना,
हमे आज भी याद है...

सुबह जल्दी उठना, और करना नया ड्रामा,
जब न चले बहाना, घिसट कर स्कूल जाना,
हमे आज भी याद है ...

स्कूल से हो छुट्टी, पर लेट घर था आना,
वो खेलना-कूदना, लड़ना और शक्तिमान का जमाना,
हमे आज भी याद है ...





प्रेरणादायक कहानियाँ

सुश्री स्मृति निवेदिता साहू

पुत्री - श्री भोलानाथ साहू,
वरि. लेप. / सा. क्षे. - ।।।

मेहनत की मिठास

बहुत साल पहले काशी में एक राजा रहते थे । राजा ने एक बार सब लोगों को दावत दी । बड़ी संख्या में लोग राजभवन में भोजन करने आए । सब लोग खा-पीकर अपने घरों को चले जाने के बाद राजा जंगल की ओर चल दिए । अपनी दावत पर वे मन ही मन प्रसन्न हो रहे थे ।

रास्ते में कई लोगों से मुलाकात हुई । वे सभी राजा की प्रशंसा कर रहे थे । अपनी प्रशंसा सुनकर वे सोच रहे थे कि मैं कितना बड़ा राजा हूँ । खूब दान करता हूँ । भला मेरे समान और कौन है ऐसा ? ये सोचकर वे आगे चल दिए ।

आगे जंगल में उन्हें सामने से एक लकड़हारा दिखाई दिया उसके सिर पर लकड़ियों का एक बड़ा गट्ठर लदा था । वह पसीने से लथपथ हो रहा था । उसे देखकर राजा बोले, "अरे भाई, आज तुझे लकड़ी काटने की क्या जरूरत थी ? आज राजा ने सबको दावत का निमंत्रण दिया था ।"

राजा की बात सुनकर लकड़हारा बोला "मुझे सब पता था, पर जिसे मेहनत की कमाई खाने की आदत पड़ गई हो तो उसे दावत खाने की क्या आवश्यकता?" लकड़हारे की बात सुनकर राजा चकित हो उठें । लौटते हुए वे रास्ते भर सोचते रहे कि देश के हित में उनकी दानशीलता अधिक उपयोगी है या मेहनत की कमाई ।

महत्व अपना-अपना

पहियु बैलगाड़ी और चप्पी नाव दोनों बहुत ही घमंडी थी । पहियु बैलगाड़ी किसान का सारा सामान गाँव भर में ले जाती थी तो चप्पी नाव भी नदी पार करा कर किसान का सारा सामान क्षेत्र तक ले जाती थी । दोनों एक दूसरे से अकड़ रही थी । दोनों में कभी ज्यादा बातचीत नहीं होती थी ।

बैलगाड़ी बुरासा मुँह बनाते हुए कहती, "मैं किसी ऐरे-गैरे से बात नहीं करती ।" चप्पी भी अपना मुँह टेढ़ा कर के चिल्ला कर कहती "मैं भी तुम्हारे जैसै ऐरे-गैरे से कभी बात नहीं करती ।"

एक दिन किसान की नाव की मरम्मत करनी पड़ी । किसान ने बैलगाड़ी पर नाव को लाद दिया और बर्द्वी के घर चल दिया ।

बैलगाड़ी ने नाव से कहा, देखो मेरे सहयोग से ही तुम ठीक हो सकती हो । मैं ज्यादा कीमती हुई न ? नाव कुछ नहीं बोली, क्या कहती ।

एक बार इतनी बारिश हुई कि नदी में खूब बाढ़ आ गई । नदी पर बना पुल भी बह गया । किसान को अपना माल बेचने शहर जाना था । पुल बह जाने के कारण नदी के उस पार बैलगाड़ी ले जाना संभन नहीं था । तभी किसान को एक उपाय सूझा । उसने नाव पर बैलगाड़ी को रख

कर नदी पार हो गया ।

उस पार पहुँच कर नाव ने बैलगाड़ी से कहा , देख लिया न मेरे सहयोग से ही आज तुम नदी के उस पार आई हो । अब मैं कीमती हुई न ? बैलगाड़ी कुछ नहीं बोली । अब दोनों को एक दूसरे के महत्वपूर्ण होने का पता चल गया । इसलिए दोनों ने मुस्कुराते हुए एक दूसरे

की तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ा दिया ।

उस दिन से नाव और बैलगाड़ी ने कभी घमंड नहीं किया । दोनों अच्छे दोस्त बनकर प्रेम से रहने लगी । इसलिए कहा गया है कि महत्व अपना अपना ।

आँखें हुई चार तो मन में भरा प्यार,
आँखें हुई और तो जी में आया खोट ।।



ऐ बचपन

श्रीमती मोनिका चौहान

कनि. अनुवादक / हिंदी प्रकोष्ठ



ऐ बचपन ! प्यारे बचपन, तुम लौट के फिर से आओ न,
मस्ती वाली उस दुनिया में, वापस हमको ले जाओ न,
कुछ पल का बचपना, कितनी खुशियाँ दे जाता है,
हम तो समझ गए हैं, पर बाकी सबको समझाओ न,
ऐ बचपन ! प्यारे बचपन, तुम लौट के फिर से आओ न,

सोचा था दुनिया होगी, गुड्डे-गुड्डियों की कहानी जैसी
कदम-कदम पर फूल मिलेंगे, पर अब तो है परेशानी जैसी
खुशियाँ का था संसार जहाँ, वो कहानी फिर से सुनाओ न,
ऐ बचपन ! प्यारे बचपन, तुम लौट के फिर से आओ न,



मासूम सवालों से जहाँ, हम सबको खूब सताते थे
फिर भी प्यार से सब हमको, सारी बातें समझाते थे
मिट जाए जहाँ पर दिलों की दूरियाँ, ऐसा जहाँ बसाओ न,
ऐ बचपन ! प्यारे बचपन, तुम लौट के फिर से आओ न,
सुबह से शाम का वक्त जहाँ, हम खेल-कूद के बताते थे,
झगड़ा करते थोड़ी देर का, फिर अगले पल मिल जाते थे,
भूल जाए हम सारी उलझनें, कोई ऐसा खेल बताओ न,
ऐ बचपन ! प्यारे बचपन, तुम लौट के फिर से आओ न,
हँसना भूल गए है हम, जिम्मेदारियों में फँसकर,
भाग-दौड़ सी बनी जिंदगी, सुकून चिढ़ाता है हँसकर,
कुछ तो चैन मिले हमको, पुराने यारों से मिलवाओं न,
ऐ बचपन ! प्यारे बचपन, तुम लौट के फिर से आओ न ।





बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

श्री संतोष कुमार बेहेरा

स.लेप.अ., वाणिज्यिक लेप.

यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता अर्थात् जहाँ नारियों को सम्मान दिया जाता है वहीं साक्षात् देवता निवास करते हैं। यह आपकी और मेरी कही हुई बात नहीं है वरन् वेद वाक्य है, फिर भी इस ध्रुव सत्य पर उपेक्षा के बादल मँडराते रहे हैं। इसके आधुनिक पक्ष पर विचार करें तो नारी सशक्तीकरण, लाडली योजना, बेटी बचाओ आदि योजनाएं चलाई जा रही हैं, जो हमारे समाज के उच्च पदों पर आसीन बुद्धिजीवियों के सृष्टि की संरचना में आधुनिक भूमिका निभाने वाली महिलाओं को उनके अधिकार दिलाने में सराहनीय प्रयास को दर्शाता है वहीं दूसरे तरफ ऐसे भी लोग हैं जो इन सब चीजों से अनभिज्ञ हैं कि नारियाँ समाज के विकास में बराबर की भागीदार हैं जिन्हें अपना अधिकार मिलना ही चाहिए। किसी के जहन में यह साधारण सी बात क्यों नहीं आती है कि उनके अस्तित्व में आधी साझेदारी स्त्री की ही है और यदि वे इस विषय पर थोड़ा और विचार करें तो वे यह भी जान पाएंगे कि अगर उनके व्यक्तित्व में कहीं भी कुछ भी कमी रह गई तो उसके पीछे उनसे जुड़ी स्त्रियों के अधिकारों का हनन है। यदि हम विकसित देशों की तरफ देखें तो पाएंगे कि वहाँ नारियों को पुरुषों के समान अधिकार दिया जाता है। ऐसे ही कुछ कारणों की वजह से माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी ने 22 जनवरी 2015 को बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान की शुरुआत की है।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ एक ऐसी योजना है जिसका अर्थ है भ्रूण हत्या को रोकना एवं बालिकाओं को शिक्षित कर समाज के विकास में सहभागीदार बनाना। इस योजना को भारत सरकार ने जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से प्रारंभ किया गया है।

लड़कों की तुलना में लड़कियाँ किसी भी क्षेत्र में कम नहीं होती हैं और लड़कियाँ लड़कों की अपेक्षा अधिक आज्ञाकारी, कम हिंसक एवं अभिमानी साबित होती हैं। लड़कियाँ अपने माता-पिता की अधिक परवाह करती हैं। एक महिला अपने जीवन में माता, पत्नी, बेटी, बहन की भूमिका निभाती है। हमारे देश में नारियों के प्रति मानसिकता में प्रगति शिथिल पड़ी हुई है। लिंगानुपात के बढ़ते असंतुलन को देखकर भी हमारी आँखें नहीं खुलती हैं। पिछले 15 वर्षों से हम देखते आ रहे हैं कि सी.बी.एस.ई. बोर्ड की परीक्षाओं में लड़कियाँ ही अक्ल आ रही हैं।

इस मिशन का मूल उद्देश्य समाज में पनपते लिंग असंतुलन को नियंत्रित करना है। इस अभियान के द्वारा कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध आवाज उठाई गयी है। यह अभियान हमारे घर की बहू-बेटियों पर होने वाले अत्याचार के विरुद्ध एक संघर्ष है। इस अभियान के द्वारा समाज में लड़कियों को समान अधिकार दिलाए जा सकते हैं। सबसे बड़ा अपराध कन्या भ्रूण हत्या है, जिसमें लिंग परीक्षण

कराना भी शामिल है, जिसपर रोक लगाना चाहिए।

भारत के प्रत्येक नागरिक का दायित्व है कि वे बालिकाओं के बेहतर पालन-पोषण के साथ समाज में इनका स्तर सुधारने के लिए प्रयास करें। माता-पिता द्वारा भी किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए एवं बेटियों को भी समाज के किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ने हेतु सहयोग करना चाहिए। समाज के सभी व्यक्तियों को ध्यान में रखना चाहिए:

- बेटा है कुदरत का अनमोल उपहार, इसे जीने और पढ़ने का दो अधिकार,

- बेटा है, तो कल है,
- बेटा का करोगे नाश, तो हो जाएगा सब का विनाश,
- जिस घर में बेटियां होगी, उस घर पर खुशहाली होगी,
- जहां होगा बेटियों का सम्मान, वही देश होगा महान,
- शिक्षित बेटा ही शिक्षित परिवार की पहचान,
- सोच बदलो बेटा आई है, मानो घर में लक्ष्मी आई है,
- बेटियां समस्या नहीं, समस्या का है समाधान,
- आओ आओ मिलकर करें प्रयास, बेटा बचाएं बेटा पढ़ाएं।



इस जग में भेजा था तूने

श्री ऋतुध्वज

लेखापरीक्षक, ई.डी.पी. प्रकोष्ठ



इस जग में भेजा था तूने
तो जग का जीवन भी देता ।
जैसा मुझको हृदय दिया था,
कुछ वैसे साधन भी देता ।

राई सी है दुनिया तेरी
पर्वत से है सपने मेरे;
मेरी प्रतिभा के हारिल को
सीमाहीन गगन भी देता ।

सागर के प्यासे की भी क्या,
ओज कणों से प्यास बुझी है ?

प्रेम - प्यास मुझको दी थी,
तो प्रेम सहित मधुकण भी देता ।

तीनों लोक लीक से लगते,
मेरी आकांक्षा के आगे,
कलित कामना की क्रीड़ा को
विस्तृत सा प्रांगण भी देता ।

प्रस्तर की प्रतिमा में कब तक
प्राण प्रतिष्ठा होगी तेरी ?
कण - कण में जो तुझे देखते,
ऐसे दिव्य-नयन भी देता ।





भारत में विविधता में एकता

श्री अजीत कुमार तिवारी

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

(ई. एस - I)

भारत एक विविधतापूर्ण देश है। इसके विभिन्न भागों में भौगोलिक अवस्थाओं और उसकी संस्कृतियों में अन्तर है। कुछ प्रदेश ठंडे हैं तो कुछ गर्म, कुछ भाग रेगिस्तानी हैं तो कहीं वर्षा का अतिरेक है।

विभिन्न राज्यों में रहने वाले लोग भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं। पंजाब, असम, तमिलनाडु, करेल के निवासियों को देखकर उन्हें एक संस्कृति तथा एक अंग का नहीं मान सकते / देश में अनेक प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं तथा भिन्न-भिन्न धर्मों के लोग रहते हैं।

इन सब विविधताओं के बावजूद भारत एकता के सूत्र में बंधा है। इसकी जड़े देश के कोने-कोने में फैली हुई हैं। भारत के लोगों में प्रवाहित एकता की धारा देश के जन-जन को एकता के सूत्र में बांधी रखी है। भारत में सदैव राजनीतिक एकता रही है। मौर्यकाल, गुप्तकाल और उसके बाद मुगलकाल में भी सम्पूर्ण भारत एक शक्तिशाली राजनीतिक इकाई रहा है। यही कारण है कि देश के भीतर छोटे - मोटे विवाद, बड़े - बड़े युद्ध तथा त्वापक उथल पुथल के कारण भी राजनीतिक एकता का सूत्र खण्डित नहीं हुआ।

भारत की संस्कृति का एक शक्तिशाली पक्ष इसकी धार्मिक एकता है। भले ही भारत में विभिन्न सम्प्रदाय के लोग रहते हों लेकिन उनकी भावना भारत के प्रति एकाग्र है।

इसी धार्मिक एकता ने देश को व्यापक दृष्टिकोण दिया जिसको लोगों को जोड़ने की असीम शक्ति है। नानक, तुलसी, बुद्ध, महावीर जैसे महान व्यक्ति इस धरती पर अभिनन्दनीय हैं। देश के मन्दिरों, मस्जिदों और गुरुद्वारों के समक्ष सभी खड़े होते हैं। चारों धर्मों के प्रति जन-जन की आस्था इसी सांस्कृतिक एकता का मूल तत्व है।

भारत की एकता का सबसे सुदृढ़ स्तम्भ इसकी संस्कृति है। रहन-सहन, खान पान, वेश-भूषा की विविधता के पीछे सांस्कृतिक समरसता का तत्व विद्यमान है। भाषाओं के बीच पारस्परिक सम्बन्ध व आदान-प्रदान, साहित्य के मूल तत्व इत्यादि हमारी सांस्कृतिक मैलिक एकता का प्रमाण है।

भारत की धरती, पहाड़ों, नदियों, हरे - भरे खेत, और जीवन दर्शन प्रति लोगों में कितना अपनापन, कितना प्यार तथा कितनी भावात्मक लगाव है, इसकी कल्पना नहीं की जा सकती है।

एक इतिहासकार ने कहा है कि भारत में ऐसी आधारभूत और दृढ़ एकता है जो रंग रूप, वेष-भूषा, रहन-सहन की शैलियों और जातियों की अनेकताओं के बावजूद सर्वत्र विद्यमान है।

हिंदी देश के निवासी सभी जन एक हैं।

रंग, रूप, वेष-भाषा चाहे अनेक हैं।।



महिलाओं के साथ हिंसात्मक व्यवहार

श्री राजेश कुमार झा

लेखापरीक्षक, कार्यालय स्थापना



माँ लक्ष्मी, माँ सरस्वती की चाहे कितनी भी पूजा कर लो, या फिर 9 दिन अखंड उपवास कर लो लेकिन अगर नारी की इज्जत करना नहीं सीखा तो सब बेकार है ।

आज जमाना कितना आगे निकल चुका है, इंसान चाँद पर जा चुका है, कम्प्यूटर युग आ चुका है पर पुरुषों की मानसिकता में कोई बदलाव नहीं हुआ है । आज भी पुरुष महिलाओं को भोग-विलास की सामग्री मात्र समझते हैं । आज भारत में 65% महिलाएं साक्षर हैं पर इसके बावजूद भी उस पर तरह-तरह के अत्याचार होते हैं । क्या स्त्री पुरुष के मुकाबले प्राकृतिक रूप से कमजोर होता है जो पुरुष स्त्री पर अत्याचार करता रहता है । देश की राजधानी दिल्ली बलात्कार की राजधानी बन चुकी है । महिलाएं वहाँ बिल्कुल भी सुरक्षित नहीं हैं । एक आकड़े के अनुसार दिल्ली में हर 18 मिनट में 1 बलात्कार होता है ।

निर्भया, कटुआ, बुलंदशहर जैसा काण्ड हमारे समाज पर कलंक बन चुके हैं । अपराधी वयस्क महिलाओं को तो शिकार बनाते ही हैं, छोटी बच्चियों को भी नहीं छोड़ते हैं । ऐसा क्यों हो रहा है ? क्या अब देश में पुरुष की मानसिकता ही दूषित और विकृत हो गयी है । 2018 में समूचे भारत देश में कुल 28947 बलात्कार की घटनाएँ

हुई हैं । सबसे अधिक घटनाएँ मध्य प्रदेश में हुईं ।

कई घटनाओं में पुरुष स्त्री के साथ प्रेम और शादी करने का झांसा देकर उनका यौन - शोषण करते हैं । जब अपना स्वार्थ सिद्ध हो जाता है तो वह शादी करने से इंकार कर देता है । ऐसे में महिला अकेली पड़ जाती है और लोक-लज्जा के भय से अंदर ही अंदर घुटती हुई अपने ऊपर होने वाले तमाम अपराधों को बर्दाश्त करती है ।

आजकल महानगरों में लिव-इन रिलेशनशीप का चलन बहुत बढ़ गया है । इसमें लड़का लड़की बिना किसी शादी के बंधन के साथ में रहते हैं । कई बार आधुनिकता के इस चक्कर में भी महिलाओं का शोषण हो जाता है ।

महिलाओं के साथ होने वाले अपराध के प्रकार-

- लैंगिक, नस्लभेदी, स्त्री सूचक अपमानजनक टिप्पणी ।
- घरेलू हिंसा
- आफिस दफ्तर पर शोषण, यौन उत्पीड़न ।
- कन्या भ्रूण हत्या
- बलात्कार
- हत्या
- दहेज उत्पीड़न

- प्रेम और शादी का झांसा देकर किया गया यौन शोषण।
- मनपसंद विवाह से रोकना
- पुरुष की तुलना में कम वेतन मिलना
- बाल विवाह।
- विधवा होने पर पुनः शादी करने से रोकना
- जेल में महिला केदियों का शोषण, यौन उत्पीड़न।।
- बसों, ट्रेन, मेट्रो ट्रेन जैसे सार्वजनिक स्थान पर महिलाओं से छेड़ छाड़।
- धर्म के नाम पर धर्मगुरु, बाबाओं द्वारा किया जाने वाला शारीरिक शोषण।

महिलाओं के साथ अपराध के कारण

इसकी सबसे बड़ी वजह है कि आज भी पुरुषों की सोच में कोई अंतर नहीं आया है। आज का पुरुष मीडिया, टीवी और अखबार में तो बड़ी - बड़ी बातें करते हैं, महिलाओं की आजादी और उनके हक की बात करते हैं पर घर के अंदर वो स्त्री को अपनी दासी ही समझाता है। शादी के बाद पति अपनी पत्नी को पैर की जूती समझने लगता है। वो चाहता है कि पत्नी कमाकर भी लाये और घर के सारे काम भी करे।

इससे पता चलता है कि हमारा समाज आज भी पुरुष प्रधान है। आज भी हम लड़के का जन्म होने पर खुशी मनाते हैं पर लड़की होने पर शोक मनाते हैं। विवाह के बाद एक लड़की यह सोचकर ससुराल जाती है कि उसे एक अच्छा प्यार करनेवाला पति मिलेगा, चाहने

वाली सास मिलेगी पर ये सपना - सपना ही रह जाता है।

21 वीं सदी में होने के बाद भी आज हमारे देश में रोज हजारों लड़कियों को जलाकर मार दिया जाता है। क्योंकि उनके माँ -बाप दहेज नहीं दे पाये। ससुराली जन आये दिन कोई न कोई फरमाइश करते रहते हैं। कभी कोई सामान, सोने के गहने माँगते हैं तो कभी कैश पैसा माँगते हैं। जब उनकी फरमाइश पूरी नहीं होती है तो लड़की को तरह तरह से परेशान करते हैं। ये सब बहुत ही दुखद है। व्यक्ति दूसरे की लड़की को खूब परेशान करता है पर जब खुद की लड़की के साथ ऐसा होता है तो उसे बुरा लगता है। आज हमारे देश में 70% महिलायें घरेलू हिंसा की शिकार हैं। जबकि अमेरिका में 40% महिलायें इसकी शिकार बनती हैं।

उनको तरह तरह से परेशान किया जाता है। पुरुष सोचता है कि आखिर एक अबला औरत उसका क्या कर लेगी। पुरुष अपनी पत्नी को छोटी-छोटी बात पर पीट देते हैं। हमारे समाज में एक महिला का उत्पीड़न सिर्फ पुरुष ही नहीं करता है बल्कि दूसरी महिला भी करती है।

आमतौर पर लड़की की सास, ननद, भाभी, जेठानी उसे तरह - तरह से परेशान करती हैं। पुरुष महिलाओं सभी को अपना नजरिया बदलना होगा तभी हालात सुधरेगे। अतः हमारे समाज में महिलाओं के प्रति उपेक्षात्मक दृष्टिकोण में बदलाव की नितांत आवश्यकता है।

देश में महिलाओं को अपनी सुरक्षा के लिए प्राप्त अधिकार

हमारे देश में महिलाओं को अनेक अधिकार दिये गये हैं जिससे उनकी सुरक्षा हो सके-

- समान वेतन पाने का अधिकार
- ऑफिस, दफ्तर में हुए उत्पीड़न के खिलाफ अधिकार
- योन उत्पीड़न होने पर नाम न छापने का अधिकार
- घरेलू हिंसा के खिलाफ अधिकार
- मातृत्व सम्बन्धी लाभ के लिए 6 महीने के सरकारी अवकाश का अधिकार जिसमें वेतन मिलता रहता है ।
- कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ अधिकार
- मुफ्त कानूनी मदद का अधिकार
- रात में गिरफ्तार न होने का अधिकार
- गरिमा और शालीनता के लिए अधिकार
- सम्पत्ति पर अधिकार

समाज के नज़रिये में बदलाव

हमें अपनी विचारधारा सोच और मानसिकता को बदलना होगा कुदरत ने स्त्री को सिर्फ भोग-विलास या शोषण के लिए नहीं बनाया है । उसे भी अच्छा जीवन

जीने का हक है जैसे पुरुषों को है । उसके साथ दहेज, पुत्र को जन्म देने, चारित्रिक संदेश के आधार पर शोषण उत्पीड़न नहीं करना चाहिए। अपनी सोच बदलनी होगी ।।

सरकार को चाहिए कि महिलाओं की सुरक्षा के लिए कठोर कानून बनाये जाएं। बलात्कार से संबंधित कानून को सख्ती से लागू करना चाहिए । आरोपियों को जमानत नहीं देनी चाहिए । कड़े कानून बनाने चाहिये । हमें महिलाओं की साक्षरता को बढ़ाना होगा।।

जब 100% लड़कियाँ, महिलायें साक्षर होगी तो वो अन्याय होने पर अपनी मदद खुद कर सकती हैं । पुलिस को चाहिये कि वो ऐसी घटना होने पर फौरन कार्यवाही करे। दोषियों को तुरंत गिरफ्तार करें।

निष्कर्ष

कुदरत ने स्त्री - पुरुष को समान बनाया है। हमें पुरुष को ताकतवर और स्त्री को कमजोर समझने की भूल नहीं करनी चाहिए । क्या स्त्रियों के बिना यह दुनिया चल सकती है ? जब एक स्त्री बच्चे को जन्म देती है तो ही सृष्टि आगे बढ़ती है । इसलिए हमें महिलाओं का सम्मान करना चाहिए । उसके साथ अत्याचार नहीं करना चाहिए ।



कार्यालयी कार्यों की झलकियाँ

राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथा संशोधित 1967) की धारा 3(3) के अनुसार सामान्य आदेश, संकल्प, परिपत्र, नियम, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन, प्रेस विज्ञप्तियां, संविदाएं, करार, अनुज्ञप्तियां, निविदा प्रारूप, अनुज्ञा पत्र, निविदा सूचनाएं, अधिसूचनाएं, संसद के समक्ष रखे जाने वाले प्रतिवेदन तथा कागज पत्र द्विभाषी में जारी होने चाहिए। हमारे कार्यालय (सा. एवं सा. क्षे. लेप.) में धारा 3(3) का पूर्णतः पालन किया जाता है। इसके लिए जारी करने वाले अनुभाग के स्तर से अथवा हिंदी प्रकोष्ठ की सहायता से सभी दस्तावेजों का अनुवाद किया जाता है। इस प्रक्रिया को सुगम बनाने हेतु प्रत्येक अनुभाग से अंग्रेजी में जारी किए जाने वाले दस्तावेजों को ई-मेल के द्वारा हिंदी प्रकोष्ठ को भेजा जाता है एवं हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा उसकी अनूदित प्रति वापिस ई-मेल द्वारा प्राप्त की जाती है। इससे कार्य में शीघ्रता एवं अधिक सुगमता आई तथा इससे हिंदी पत्राचार में अभूतपूर्व वृद्धि भी हुई।

कार्यालय द्वारा प्रत्येक तिमाही में हिंदी कार्यशाला का नियमित आयोजन किया जाता है। कार्यशाला के आयोजन से यह देखा गया है कि कार्यालय 'ग' क्षेत्र में होने के बावजूद यहाँ के अधिकारियों / कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुझान बढ़ा है जिसकी झलकियाँ संचिकाओं की टिप्पणियों में दिखती है। साथ ही साथ सभी अनुभागों से होने वाले पत्राचारों में हिंदी की वृद्धि की गूँज सुनाई पड़ती है।

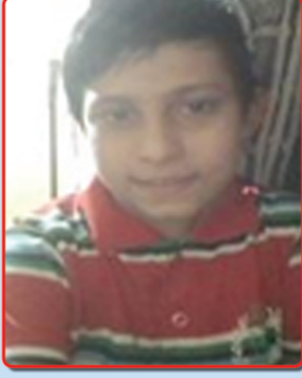
हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा अपने कार्यालय के अनुभागों का क्रमबद्ध रूप से राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया जाता है जिससे सभी अनुभागों की कार्यप्रणाली में सुधार हुआ है एवं एक सही दिशा मिली है जिसका प्रभाव उनके कार्यालयी कार्यों पर दिखने लगा है।

हमारे कार्यालय में प्रत्येक तिमाही को राजभाषा कार्यालयन समिति की बैठक नियमित रूप से आयोजित की जाती है जिसकी अध्यक्षता महालेखाकार (सा. एवं सा. क्षे. लेप.) महोदय द्वारा की जाती है एवं समस्त वर्गाधिकारी सहित सभी अनुभागों के शाखाधिकारी इस बैठक में उपस्थित होकर चर्चा में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। हमारे कार्यालय से नगर राजभाषा कार्यालयन समिति की बैठक में अधिकारी / कर्मचारी सकारात्मक रूप से भाग लेते हैं।

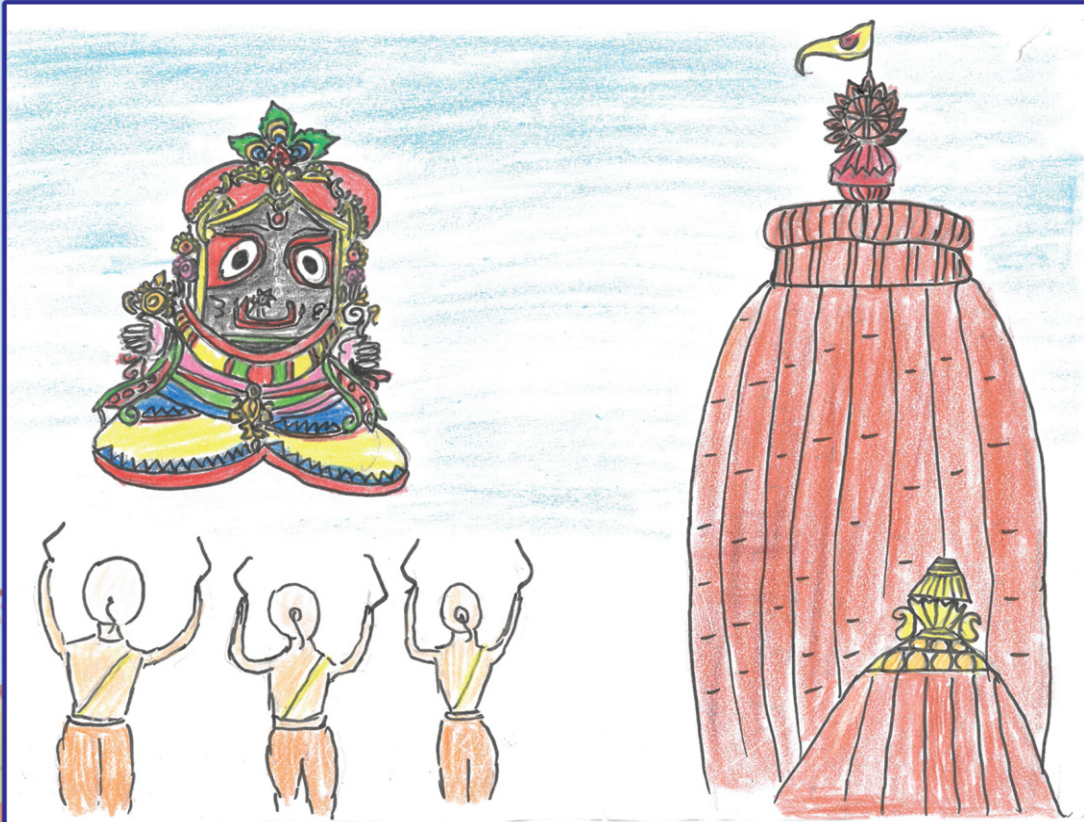
वर्ष 2019 सितंबर माह में पखवाड़ा के दौरान हमारे कार्यालय से प्रकाशित होने वाली अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका 'सुरभि' के 14वें अंक का विमोचन प्रधान महालेखाकार (आ. एवं रा. क्षे. लेप.) एवं महालेखाकार (सा. एवं सा. क्षे. लेप.) द्वारा सभी गणमान्यों की उपस्थिति में किया गया था। पखवाड़ा के दौरान कार्यालय में टिप्पण लेखन, मसौदा लेखन, निबंध लेखन, अनुवाद एवं शब्द/वाक्य शुद्धिकरण प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थीं जिसमें अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था।

इस तरह, कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग से कार्यालय में हिंदी रूपी दीपक को ज्योतिर्मान रखने का सफल प्रयास किया जा रहा है।





मुर्लीधर पंडा
सुपुत्र - श्री गंगाधर पंडा,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



दिव्यजीवन महांति,
सुपुत्र - श्री जोगानंद महांति,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक